डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 31 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

जयपुर >> सोमवार, 07 फरवरी, 2022

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746 hillviewsamachar@gmail.com

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

स्वर साम्राज्ञी, विश्व पटल पर अपनी सुरमई मधुर आवाज़ से राज करने वाली स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन पर हिलव्यू समाचार परिवार अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की वेबसाइट का अपग्रेडेड वर्जन लॉन्च

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक पुरूषोत्तम शर्मा ने यहां शासन सचिवालय स्थित निदेशालय में विभाग की वेबसाइट के अपग्रेडेड वर्जन को लॉन्च किया। निदेशक पुरूषोत्तम शर्मा ने बताया कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से जन कल्याण पोर्टल के माध्यम से अपग्रेड होने वाली यह राज्य की पहली विभागीय वेबसाइट है। वेबसाइट को आकर्षक बनाने के साथ इसमें कई नए फीचर जोड़े गए हैं। वेबसाइट के मुख्य पेज पर कई जानकारी आसानी से मिल जाएगी। प्रेस विज्ञप्तियां मुख्य पेज पर ही सामने आ जाएगी। इन्हें विभाग, जिला एवं विशिष्ट व्यक्ति की श्रेणी के अनुसार देखने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। यहां राज्य सरकार की योजनाओं एवं पत्रकार कल्याण से जुड़ी योजनाओं को देख सकते हैं। मुख्य पेज पर ही लेटेस्ट ऑडियो, वीडियो, फोटो, पोस्टर एवं विज्ञापन सहित कई जानकारियां प्रदर्शित की गई है। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की वेबसाइट के निर्माणकर्ता एवं मुख्यमंत्री कार्यालय आईटी सेल के प्रभारी राजेश सैनी ने बताया कि वेबसाइट को मुख्यमंत्री सूचना तंत्र से कनेक्ट किया गया है एवं डीआईपीआर के बजट घोषणा एवम् जन घोषणा पत्र के मुख्य बिंदु सीएम डायरेक्शंस एवं उपलब्धियां भी वेबसाइट पर प्रदर्शित की गई है । श्री सैनी ने बताया कि पोर्टल को समस्त जिलों की वेबसाइट से भी जनकल्याण पोर्टल के माध्यम से कनेक्ट किया गया है। अब डीआईपीआर के जनसम्पर्क अधिकारियों द्वारा जारी की गई प्रेस विज्ञप्ति को जिले की वेबसाइट पर भी प्रदर्शित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त जन कल्याण पोर्टल के मोबाइल एप पर भी राज्य स्तर एवं जिला स्तर की समस्त प्रेस रिलिज को भी देखा जा सकता है। श्री सैनी ने बताया कि जन कल्याण पोर्टल के माध्यम से 33 जिलों की वेबसाइट बनाई गई है। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना की वेबसाइट भी जनकल्याण पोर्टल के माध्यम से बनाई गई है। डीआईपीआर पहला ऐसा विभाग है जिसकी वेबसाइट भी जनकल्याण पोर्टल के माध्यम से बनाई गई है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी अनुराग वाजपेयी, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के अतिरिक्त निदेशक अरूण जोशी, एनालिस्ट कम प्रोग्रामर (एसीपी) मनोज माहेश्वरी एवं एसिसटेंट प्रोगामर प्रगति शर्मा भी उपस्थित थी।

25-26 फरवरी को ही होगी आरएएस मुख्य परीक्षा, 20 हजार 102 अभ्यर्थी होंगे शामिल

चार परियों में होगी आरएएस मुख्य परीक्षा

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) की फुल कमीशन बैठक में आरएएस मुख्य परीक्षा 25 और 26 फरवरी को कराने का फैसला हुआ है। राजस्थान लोक सेवा आयोग के चेयरमैन जसवंत राठी ने बताया कि मुख्य परीक्षा 2 दिन दो पारियों में आयोजित की जाएगी। इस दौरान प्रदेश के सातों संभाग मुख्यालय पर परीक्षा का आयोजन होगा। जिसमें पहली पारी की परीक्षा सुबह 9 से 12 बजे तक जबकि दूसरी पारी दोपहर 2 से शाम 5 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षा 20 हजार 102 अभ्यर्थी शामिल होंगे।

प्रदेशभर में आरएएस मुख्य परीक्षा की तारीख आगे बढ़ाने को लेकर छात्रों का विरोध अब भी जारी है।

मुख्य परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों का कहना है कि आरपीएससी द्वारा मुख्य परीक्षा के सिलेबस में बदलाव किया गया है। लेकिन छात्रों को तैयारी का वक्त नहीं दिया गया। जिससे छात्रों की प्रॉपर तैयारी नहीं हो पाई है। ऐसे में भर्ती परीक्षा की तारीख को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। राजस्थान लोक सेवा आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष जसवंत राठी ने कहा कि आयोग की और से जारी भर्ती परीक्षा कैलेंडर के अनुसार ही सभी परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। राठी ने बताया कि आरपीएससी की कार्यप्रणाली को भी अब संघ लोक सेवा आयोग की तर्ज पर विकसित करने की तैयारी की जा रही है। ऐसे में सभी भर्ती परीक्षाओं का निर्धारित वक्त पर होना जरुरी है। उन्होंने बताया की आरपीएससी का अध्ययन दल संघ लोक सेवा आयोग की कार्यप्रणाली को देखने के लिए जाएगा। इस दल में आयोग के सदस्य और अधिकारी शामिल होंगे। ताकि हम आरपीएससी में भी संघ लोक सेवा आयोग की तर्ज पर अच्छे बदलाव ला सके।

राठी ने बताया की आरपीएससी की ओर से 10 जनवरी को वन टाइम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया की शुरुआत की गई थी। इसमें अभी तक 12 हजार 700 अभ्यर्थियों ने रजिस्ट्रेशन भी करा लिए है। राठी ने बताया कि वन टाइम रजिस्ट्रेशन के माध्यम से अभ्यर्थियों को विभिन्न भर्तियों के लिए आवेदन करते समय बार-बार विवरण दर्ज करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। ऐसे में भविष्य में सभी आवेदन इसी प्रक्रिया के माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे।

मूर्ख लोगों की गलत सलाह से वसुंधरा ने पत्रकारिता विश्वविद्यालय को बंद किया : मुख्यमंत्री गहलोत

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गुरुवार को वीसी के माध्यम से हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर के भवन का शिलान्यास किया. इस दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मीडिया की भूमिका को लेकर कहा कि देश की आजादी से लेकर अब तक इतिहास गवाह है कि पत्रकार और साहित्यकारों ने समाज को दिशा देने में कितनी बड़ी भूमिका निभाई है।

सीएम गहलोत ने कहा कि मुझे इस बात की खुशी है कि जो सपना मैंने 20 साल पहले देखा था, वह आज मूर्त रूप ले रहा है, लेकिन मुझे इस बात का भी अफसोस है कि सरकार बदलने के साथ ही योजनाओं को बदलना और बंद करना यह गलत परिपाटी बन गई है। हमने हमारी पिछली सरकार में पत्रकारिता विश्वविद्यालय खोला, लेकिन बाद में हमारी सरकार बदल गई. मुझे इस बात का बड़ा अफसोस है कि सरकार बदलने के साथ ही पत्रकारिता विश्वविद्यालय को भी बंद कर दिया और राजस्थान यूनिवर्सिटी में मर्ज कर दिया गया, जहां फैकल्टी तक नहीं थी। ऐसी स्थिति में वहां पर किस तरह से बच्चों को पत्रकारिता के बारे में पढ़ाया जाता. मेरी समझ से परे है कि पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे किन मूर्ख लोगों की सलाह से यह निर्णय लिया. मैं यह भी समझ नहीं पा रहा कि आखिर किसका दबाव था कि पत्रकारिता विश्वविद्यालय को बंद करके मर्ज करने का निर्णय लिया गया. गहलोत ने केंद्र पर निशाना साधते हुए कहा कि आज मीडिया केंद्र के दबाव में काम कर रहा है. मीडिया के मालिकों के भी ईडी, सीबीआई के छापे पड़ सकते हैं. देश में हिंसा, तनाव और अशांति का माहौल है जो देश के लिए चिंता की बात है. कोई नहीं जानता कि देश किस दिशा में जाएगा।

लोकतंत्र की मूल भावना के अनुसार चलना होगा. हम चाहते हैं कि किस तरह माहौल ठीक हो, इसमें पत्रकारिता की भूमिका भी विशेष होती है. सरकार किसी भी पार्टी की हो, उसे आईना दिखाते रहें। सीएम गहलोत ने कहा कि राजस्थान के छात्रों को भी अवसर मिलना चाहिए. पत्रकारिता विवि के लिए कोई कमी नहीं होगी, हाईटेक जमाना है. हमें वैसी ही तैयारी करनी पड़ेगी. दहमीकलां में यह पत्रकारिता विवि बनेगा. अभी विवि में 200 छात्र हैं, मैं चाहूंगा कि यह संख्या 2000 हो. साधनों की किसी तरह की कमी नहीं आने दी जाएगी. सीएम ने अधिकारियों से कहा कि इसका काम समयबद्ध पूरा करें. 18 महीने की बजाय 15 महीने में काम पूरा करें।

सोमवार से बुधवार जयपुर में रहेंगे मंत्री

राज्य कैबिनेट और मंत्रिपरिषद की बैठक में मुख्यमंत्री ने सभी मंत्रियों को प्रभार के जिलों में महीने में दो बार जाने के निर्देश दिए

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राज्य कैबिनेट और मंत्रिपरिषद की बैठक में मुख्यमंत्री ने सभी मंत्रियों को प्रभार के जिलों में महीने में दो बार जाने के निर्देश दिए। मंत्रियों को सोमवार से बुधवार तक जयपुर में ही रहने के लिए कहा गया है। बुधवार को कैबिनेट मीटिंग होती है. इसलिए मंत्रियों को राजधानी नहीं छोड़ने के निर्देश दिए हैं। हर प्रभारी मंत्री को जिला कांग्रेस कार्यालय में जाने, जनसुनवाई करने, अपने प्रभार वाले जिले के हर विधानसभा क्षेत्र में जाकर सभी विभागों की मॉनिटरिंग मीटिंग लेने और सरकार की जनकल्याण की स्कीमों की प्रोग्रेस रिपोर्ट तैयार करने को कहा गया है। गहलोत ने मंत्रियों को कहा है कि मुख्यमंत्री चिरंजीवी बीमा योजना, स्टूडेंट्स को रोडवेज बसों में फ्री यात्रा योजना, फ्री दवा और जांच योजना, उड़ान योजना में सवा करोड़ महिलाओं को फ्री सैनेटरी नैप्कीन बांटने की स्कीम, सरकार की पेंशन योजना की प्रगति रिपोर्ट तैयार करने का काम प्रभारी मंत्री ही करेंगे। सभी मंत्रियों को विधायकों के टच में रहकर प्रदेश की समस्याओं को दूर करने, पूरे राजस्थान में मंत्रियों को टाइम टू टाइम हर जिले में जाने और अपने विभाग की मीटिंग लेने,वहां जनसुनवाई करने के निर्देश मुख्यमंत्री ने दिए हैं। 6 महीने पहले भी मुख्यमंत्री इसके आदेश दे चुके हैं। कोविड के कारण बीच में कुछ गैप आ गया। अब केसेज घटने के बाद फिर से इसका इम्प्लीमेंटेशन शुरू करने को कहा गया है।

कैबिनेट बैठक के बाद मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास मीडिया से रूबरू हुए। उन्होंने कहा मंत्रिमंडल की बैठक सिर्फ 15 मिनट ही चली। जिसके बाद चुनाव प्रभारी संजय निरूपम और पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा ने सभी मंत्रिमंडल सदस्यों से मुलाकात की। बैठक में गंगानगर में मेडिकल कॉलेज बनाने के लिए स्वर्गीय बीडी अग्रवाल की ओर से सरकार को दी गई बैंक गारंटी जब्त नहीं करने और बैंक गारंटी से फ्री करने का प्रपोजल पास किया गया। जोधपुर की भदवासिया विकास समिति को गर्ल्स होस्टल के लिए 5 फीसदी की रियायती रेट पर लैंड अलॉटमेंट के आदेश को बरकरार रखने का प्रपोजल पास किया गया।

जट्ट पट्टी प्रजापति समाज को फ्री लैंड अलॉटमेंटः टोंक के सेवारामपुरा गांव के आराजी खसरा नम्बर 38, 39 और 41 की 06 बीघा 7 बिस्वा जमीन को ऑक्शन से फ्री करने का प्रपोजल पास किया। बालोतरा के जट्ट पट्टी प्रजापति समाज को सामुदायिक भवन निर्माण के लिए खसरा नम्बर 609 की जमीन पर कुल 1341.08 वर्गगज जमीन को उस वक्त की रिजर्व प्राइस की 50 फीसदी रेट पर किए गए लैंड अलॉटमेंट की जगह फ्री लैंड अलॉटमेंट का प्रपोजल पास किया गया।

कैबिनेट में राजस्थान स्टेट एग्रो इंडस्ट्रीज डवलपमेंट बोर्ड के गठन के प्रपोजल में प्रस्तावित सदस्यों के साथ बाकी सदस्यों में 7 सदस्य राज्य सरकार की ओर से नॉमिनेट करने के फैसले पर मोहर लगाई गई।

सिंघवी ने की गुगौर मेले के आयोजन की मांग

छबड़ा (हिलव्यू समाचार)। छबड़ा विधायक व पूर्व मंत्री प्रताप सिंह सिंघवी ने कोरोना गाईड लाईन की पालना कराते हुए गुगोर मेले के आयोजन की प्रशासन से मांग की है। उन्होंने कहा कि जब अजमेर शरीफ में ख्वाजा साहब की दरगाह पर लाखों की संख्या में पूरे देश व मुस्लिम देशों के जायरीन उर्स मेले में आ रहे है तो छबड़ा में भर रहे बीजासन माता गुगोर के इस छोटे ग्रामीण मेले पर प्रशासन द्वारा रोक क्यों लगाई जा रही है। सरकार व प्रशासन को इस तरह का सौतेला व्यवहार नहीं करना चाहिए। संविधान ने सभी को समानता का अधिकार दिया है। सिंघवी ने मेले की अनुमति के लिए जिला कलक्टर बारां व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बारां से दूरभाष पर बात कर मेले के आयोजन की आज्ञा के लिए आग्रह किया।

सिंघवी ने कहा कि बारां जिले के छबड़ा तहसील स्थित पर्यटन स्थल गुगौर में प्रतिवर्ष माता बीजासन के मन्दिर पर प्रतिवर्ष धार्मिक एवं पशु मेला लगता है। पूर्व की भांति इस वर्ष भी दिनांक 01.02.2022 से 15.02.2022 तक राज्य सरकार की गाईडलाईन क्रमांक प.7(1)गृह-7/2021 दिनांक 09.01.2022 के अनुसार ग्राम पंचायत गुगौर द्वारा उपयुक्त स्थान पर मेले का आयोजन किया जा रहा था जिसे प्रशासन द्वारा रूकवाया जा रहा है। इस संबंध में छबड़ा देहात भाजपा मण्ड़ल अध्यक्ष अशोक गौड़, छबड़ा नगर अध्यक्ष चंद्र प्रकाश गेरा, बापचा मण्डल अध्यक्ष उदय सिंह लोधा, छबड़ा नगरपालिका अध्यक्ष के.सी. बोस, छबड़ा प्रधान हरिओम नागर, पंचायत समिति सदस्य बाबूलाल मेघवाल, मुण्डला सरपंच इकलेश मीणा, चांचौडा सरपंच नन्दकिशोर गाड़री, खोपर सरपंच मन्जू बाई, भूलोन सरपंच अंजली शर्मा, जैपला सरपंच भावना सिंह, झरखेड़ी सरपंच मानसिंह मीना, खोपर सरपंच धन्नालाल नागर, पूर्व प्रधान गोकुल रावल, पूर्व प्रधान बिशाखा देवी मीना, पूर्व प्रधान संजू लोधा एवं गुगौर सरपंच राजेन्द्र खारोल ने क्षेत्रीय विधायक प्रताप सिंह सिंघवी से मेले के आयोजन कराने के लिए प्रशासन से अनुमति दिलाने की मांग की है। विधायक प्रताप सिंह सिंघवी ने प्रशासन से मांग की है कि राज्य सरकार की कोरोना गाइडलाईन पत्र क्रमांक प.7(1)गृह-7/2021 दिनांक 09.01.2022 के अनुसार जन आस्था से जुड़े इस मेले का आयोजन राज्य सरकार द्वारा कराया जाना चाहिए।

पूर्व में राज्य सरकार द्वारा उर्स, मरू महोत्सव, बड़े पशु मेलों एवं पर्यटन के हिसाब से सशर्त मंजूरी दी गई है लेकिन गुगौर मेले की अनुमति प्रशासन द्वारा क्यों नही दी जा रही है। जबकि राज्य सरकार हर सप्ताह पांबदियो पर एक्सपर्ट के सुझाव के हिसाब से पाबंदियो मे ढ़ील दी जा रही है।

विधायक सिंघवी ने कहा कि इस मेले से क्षेत्र के लोगों की वर्षो से आस्था जुड़ी हुई है और क्षेत्र के गरीब एवं खुदरा व्यापारियों ने राज्य सरकार की दिनांक 28.01.2022 की गाईडलाईन को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त स्थान पर दुकानें भी लगा ली गई है जिसके कारण गरीब दुकानदारों का काफी नुकसान होगा। ग्रामीण क्षेत्र के आमजन एवं गरीब व्यापारियों की मांग को को ध्यान मे रखते हुए कोरोना गाईडलाईन का पालना करते हुए प्रशासन को गुगौर मेले के आयोजन की अनुमति के साथ संपूर्ण व्यवस्था भी करनी चाहिए।

फिर मेयर की कुर्सी पर सौम्या

कार्यवाहक मेयर की गैरमौजूदगी में संभाला पद

हिलव्यू समाचार

जयपुर। नगर निगम ग्रेटर जयपुर की राजनीति में आज फिर बड़ा उलटफेर देखने को मिला। पिछले साल 6 जून को मेयर पद से निलंबित हुई सौम्या गुर्जर ने आज सुप्रीम कोर्ट से मिले आदेशों के बाद मेयर की कुर्सी संभाल ली है। कार्यवाहक मेयर शील धाभाई की गैर मौजूदगी में सौम्या गुर्जर ने महापौर का पद ग्रहण किया। इससे पहले सौम्या गुर्जर ने सुबह भाजपा मुख्यालय जाकर वरिष्ठ पदाधिकारियों से मुलाकात की। 241 दिन बाद सौम्या गुर्जर नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय आई। वहीं, सौम्या गुर्जर के चार्ज दोबारा लेने को लेकर चल रही सुगबुगाहट के बीच सुबह से नगर निगम में हलचल मची हुई थी। सुरक्षा देखते हुए पुलिस और होमगार्ड के जवान पहले से तैनात हो गए। निगम परिसर को छावनी में तब्दील कर दिया। दरअसल, सौम्या गुर्जर के पक्ष में सोमवार एक फरवरी को सुप्रीम कोर्ट ने आदेश जारी किया था। इस आदेशों में कोर्ट ने न्यायिक जांच पूरी होने तक सौम्या गुर्जर को महापौर पद पर बने रहने के योग्य मानते हुए राज्य सरकार के 6 जून 2021 के आदेशों पर स्टे दे दिया था। गहलोत सरकार ने 6 जून 2021 को सौम्या गुर्जर को मेयर पद और अन्य तीन पार्षदों को आयुक्त यज्ञमित्र सिंह देव के साथ हुए विवाद के बाद निलंबित कर दिया था। निलंबन के बाद सरकार ने पूरे प्रकरण की न्यायिक जांच भी शुरू करवा दी। सरकार के निलंबन के फैसले को सौम्या गुर्जर ने राजस्थान हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने इस पूरे प्रकरण में न्यायिक जांच होने तक दखल देने और निलंबन के आदेशों पर स्टे देने से इनकार कर दिया। हाईकोर्ट के राहत नहीं मिलने के बाद सौम्या के समर्थन में भाजपा ने सुप्रीम कोर्ट में इस मामले को चुनौती दी थी।

पत्रकार आवासीय समस्या समाधान समिति की पहली बैठक

सदस्य 15 दिवस में दें आवास की पात्रता संबंधी सुझाव

जयपुर। राज्य के पत्रकारों की आवासीय समस्या के समाधान के लिए गठित समिति की पहली बैठक वर्चुअल माध्यम से हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख शासन सचिव, नगरीव विकास एवं आवासन विभाग कुंजीलाल मीणा ने समिति के सभी सदस्यों से 15 दिवस में आवास की पात्रता के संबंध में सुझाव मांगें है। मीणा ने कहा कि यह समिति राज्य के पत्रकारों को आवासीय सुविधा के लिए रियायती दरों पर भूमि उपलब्ध कराने की मांग पर विचार कर राज्य सरकार को ठोस सुझाव देगी। साथ ही, उसका प्रभावी क्रियान्वयन भी सुनिश्चित करेगी। उन्होंने बैठक में संबंधित विभागों से जिला स्तर पर पत्रकारों की आवासीय समस्याओं के संबंध में स्टेटस रिपोर्ट मांगी है। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने समिति को आवास संबंधी योजना के क्रियान्वयन के लिए पत्रकारों से आवदेन आंमत्रित कर नॉर्म्स तय करने का दायित्व दिया गया है। साथ ही, समिति पत्रकारों की आवास से संबंधी समस्याओं के संबंध में सभी कठिनाईयों का निराकरण करने के उपाय सुझाएगी। बैठक में शासन सचिव, स्वायत्त शासन विभाग जोगाराम आयुक्त, जेडीए गौरव गोयल, निदेशक सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग एवं समिति के सदस्य सचिव पुरुषोत्तम शर्मा सहित समिति के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

संपादकीय

सुरों की साधना से भारत को संजीवनी प्रदान करने वाली स्वर कोकिला लता जी राष्ट्रीय एकता की भी सशक्त मूर्ति थीं

सरस्वती पूजा के अगले ही दिन गंधर्व लोक को और भी सुंदर बनाने के लिए लताजी देवलोक को प्रस्थान कर गईं। ऐसा लगता है जैसे मां सरस्वती इस बार अपनी सबसे प्रिय पुत्री को ले जाने स्वयं आई थीं। मेरे जैसे प्रत्येक भारतीय का सुर से पहला परिचय लता मंगेशकर जी की दैवीय आवाज ही थी। उनकी संगीतमय सुरीली आवाज का जादू हर भारतीय के अवचेतन मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो गया और आगे भी रहेगा। रेडियो सिलोन, विविध भारती, आकाशवाणी और दूरदर्शन आदि से गूंजते लताजी के गीत हम सबके वजूद का हिस्सा बन गए हैं। गीतों में प्राण फूंकने का जादू उन्हें ही आता था। हर गीत को अपना बना लेने में उन्हें महारत हासिल थी। वह कंठ से नहीं, आत्मा से गाती थीं और इसीलिए उनके गीत लोगों के दिल को छू जाते थे। उन्होंने संगीत के कठिन शास्त्र को तीन मिनट का मंत्र बनाकर ऐसा सिद्ध किया कि बड़े-बड़े गवैये, साधक उनकी इस दैवीय सिद्धि को नमन करते थे और यह तय है कि आगे भी सदा करते रहेंगे।

लता जी ने 92 वर्ष का ऐसा सुंदर और सार्थक जीवन जिया, जिसका एक-एक पल सुरों के रचना संसार के निर्माण में व्यतीत हुआ। लगभग पांच पीढ़ियों ने उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुना और आने वाली पीढ़ियां भी उन्हें इसी तरह सुनती रहेंगी, क्योंकि उनकी आवाज में जो जादू था, उसका कोई सानी नहीं था। यही कारण है कि लाखों संगीत साधकों ने उन्हें अपने हृदय में सरस्वती की भांति प्रतिष्ठित किया हुआ है। लताजी माता-पिता की भक्त थीं। वह अपनी सफलता में उनके ही आशीर्वाद का उल्लेख करती थीं। अपने गुणी पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर जी से संगीत की शिक्षा लेने वाली लताजी ने जैसा संघर्ष किया और फिर उपलब्धियों के जैसे शिखर को छुआ, उसकी कल्पना करना कठिन है। पिता के असामयिक निधन ने उनके जीवन में तमाम अवरोध खड़े कर दिए। छोटी सी उम्र में उनके ऊपर अपने परिवार के पालन-पोषण का दायित्व आ गया। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और खुद को संभालने के साथ परिवार को भी सहारा दिया। उस समय मुंबई सिने जगत पर नूरजहां, शमशाद बेगम, राजकुमारी, अमीर बाई कर्नाटकी आदि की आवाज गूंजा करती थी। धीरे-धीरे अपने कठिन परिश्रम और लगन से उन्होंने चित्रपट संगीत पर अपनी प्रतिभा का ऐसा लोहा मनवाया कि उनके शानदार आगाज के साथ ही हिंदी चित्रपट की आवाज लताजी की आवाज बन गई। इसी के साथ लता मंगेशकर युग का प्रारंभ हो गया, जो कभी खत्म नहीं हुआ। इस युग के बगैर गीत-संगीत जगत की कल्पना करना कठिन है।

कहते हैं कि 2013 में जब हिंदी फिल्म जगत ने अपने सौ साल पूरे किए थे तो लताजी ने कहा था कि इसमें से सात दशक मेरे हैं। लताजी को सुनिए तो ऐसा लगता है, जैसे मां सरस्वती ने उन्हें स्वयं बैठकर संवारा और सिखाया था। मुझे लगता है कि स्त्री के जीवन का कौन सा ऐसा रूप था, कौन सा ऐसा तेवर था, कौन सा ऐसा भाव था, जो लताजी ने न गाकर दिखाए हों। बच्चे को सुलाती मां की ममतामयी लोरी हो या भक्ति भाव में डूबी प्रार्थना, प्रेम में आकंठ डूबी अल्हड़ किशोरी हो या वियोग में तड़पती बिरहन, दस वर्ष की बच्ची की आवाज हो या सोलह बरस की चंचला, लताजी सबकी आवाज थीं। ऐसी प्रतिभा विरले लोगों को ही मिलती है और यही कारण है कि उनके सुनने और सराहने वाले दुनिया भर में हैं।

लताजी कठिन से कठिन गीत पानी की सहजता से गाकर निकल जाती थीं। एक गायिका होने के नाते मैं यह कह सकती हूं कि उन्होंने भारत में चित्रपट संगीत और सुगम संगीत में गायन शैली का व्याकरण सजाया, गीत-संगीत को नई परिभाषा दी। इतना ही नहीं, उन्होंने ही गायकों को मान-सम्मान दिलाने का भी काम किया। यह उनके ही संघर्ष का परिणाम था कि गायकों को नाम और सम्मान मिलना शुरू हुआ। वह सच्चे अर्थों में सुर की साम्राज्ञी थीं, तभी तो गाते हुए सांस की आवाज भी न आने देना, शब्दों का सटीक उच्चारण करना और हर धुन पर शास्त्रीयता को सहज कर पिरो देना, वह बहुत सुगमता से कर लेती थीं। ऐसा वही कर सकता है, जिसने सुरों की सच्ची साधना बहुत लगन से की हो। लताजी का कैसा तो अद्भुत व्यक्तित्व था। वह तपस्विनी थीं। वह राष्ट्र को समर्पित एक मननशील व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं।

1962 में चीन के साथ हुए युद्ध में बलिदान हुए भारतीय सैनिकों के सम्मान में लताजी द्वारा गाया गीत-ए मेरे वतन के लोगों.. आज भी लोगों की आंखों को नम कर देता है। लताजी वीर सावरकर से प्रभावित थीं। उन्होंने सावरकर से मिलकर देश सेवा की अभिलाषा भी प्रकट की थी। तब सावरकर ने लताजी को संगीत सेवा करने की सलाह देते हुए कहा था कि वह इसी के लिए आई हैं। लता मंगेशकर जी ने अपने गीतों से भारत को जैसी संजीवनी प्रदान की, वह अलौकिक है-अद्भुत है। लताजी गाते समय चप्पल नहीं पहनती थीं, गाना उनके लिए ईश्वर की पूजा की तरह था। विगत अनेक दशकों से भारत लता दीदी के उन गीतों के साथ जी रहा है, जो हर्ष में, पीड़ा में, प्रेम में, परिहास में, भक्ति में, राष्ट्रप्रेम में गुंथे थे। हम भाग्यशाली हैं कि उस कालखंड के साक्षी हैं जिस समय लताजी इस सृष्टि को सुरों से रच रही थीं।

मृत्यु जीवन की पूर्णता है। लताजी अपने जीवनकाल में अमरत्व प्राप्त कर चुकी थीं। वह अमर हैं और अमर रहेंगी। उनके गीत सदियों गूंजेंगे। वह इकलौती थीं। न भूतों न भविष्यति। उनकी स्मृति को वंदन-नमन।

अक्षय ने करीना के ख़िलाफ़ सैफ को भड़काया

ख़ानदान ही ख़तरनाक, थोड़ा संभलकर

करीना कपूर ने ट्विंकल खन्ना के साथ इंटरव्यू में खुलासा किया है. उन्होंने उस वक्त की बात बताई है जब वह सैफ अली खान के साथ डेटिंग के शुरुआती दौर में थीं. उस वक्त अक्षय ने सैफ को करीना के खिलाफ भड़काया था. अक्षय ने कहा था कि इन लड़कियों से सावधान रहें. बाद में सैफ और करीना की शादी हो गई और बेबो को ये बात पता चल गई. अब करीना ने अक्षय की वाइफ को यह बात बताई है. उस वक्त तीनों ने 'टशन' फिल्म में साथ काम किया था. उसी दौरान करीना-सैफ के बीच नजदीकियां बढ़ी थीं. साथ में अक्षय भी थे. करीना ने बताया कि अक्षय को भनक लग गई थी कि उनके और सैफ के बीच कुछ पक रहा है. करीना बताती हैं, अक्षय को लग गया था कि हम दोनों कनेक्ट हो रहे हैं. अक्षय सैफ को किनारे ले गए और बोले, सुनो संभलकर रहना क्योंकि ये खतरनाक लड़कियां हैं, खानदान ही खतरनाक है. मैं उनको जानता हूं तो देखके रह! करीना ने बताया कि अक्षय के कहने का मतलब था कि थोड़ा संभलकर रहना, गलत जगह हाथ डाल रहे हो. इस पर सैफ बोले थे, 'मैं संभाल लूंगा'. 2008 में टशन रिलीज होने के बाद करीना और सैफ ने कुछ साल डेटिंग की, फिर 2012 में शादी कर ली थी.

नवाज ने कंगना पर गिराई बिजली

एक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी की कई ऐसी तस्वीरें सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं जिनमें उन्हें पहचानना मुश्किल है. उनकी एक तस्वीर को कंगना रनौत ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है. इस तस्वीर में नवाजुद्दीन लड़की के गेटअप में नजर आ रहे हैं और उनका ये लुक सोशल मीडिया पर आग की तरह वायरल हो रहा है. तस्वीर में उन्होंने गोल्डन रंग का गाउन पहना हुआ है और गोल्डन रंग का ही क्राउन भी कैरी किया है. नवाजुद्दीन का ये लुक बॉलीवुड गाना 'हवा हवाई' से इंस्पायर है. इस तस्वीर को नवाजुद्दीन ने भी शेयर किया है. उन्होंने लिखा है, 'बिजली गिराने मैं हूं आई....' कंगना ने नवाज की तस्वीर को शेयर करते हुए लिखा है, 'सो हॉट....' आनेवाली फिल्म 'टीकू वेड्स शेरू' में नवाजुद्दीन के इस लुक के लिए मेकअप आर्टिस्ट को लगभग 4 घंटे लगे. फिल्म में उनका किरदार हीरोइन को किडनैपर्स के चंगुल से बचाने के लिए इस अवतार को अपनाने वाला है.

एक्ट्रेस को डेट कर रहे हैं रितिक

रितिक रोशन इन दिनों रिलेशनशिप की खबरों के लेकर चर्चा में बने हुए हैं. सोशल मीडिया पर कई ऐसे पोस्ट देखने को मिल रहे हैं, जिन में कहा जा रहा है कि वह एक्ट्रेस सबा आजाद को डेट कर रहे हैं. सबा का हाथ थामे उनका वीडियो वायरल होने के बाद से ही दोनों के रिलेशनशिप में होने की खबरें वायरल हो रही हैं. वहीं सबा भी बातचीत में रिलेशनशिप के सवाल को टालती दिखीं. सबा ने न ही हां कहा और न ही इनकार किया. हाल ही में रितिक एक रेस्त्रां से सबा का हाथ थामकर निकलते दिखाई पड़े थे. उनके साथ चल रहीं सबा ने मास्क लगा रखा था. जिसके बाद सोशल मीडिया पर दोनों के रिलेशनशिप में होने के कयास लगाए जा रहे हैं.

सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर को दीपिका का जवाब

मूर्खों को भूल गए वैज्ञानिक

हाल ही में सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर फ्रेडी बर्डी ने 'गहराइयां' की एक्ट्रेस को लेकर एक कमेंट किया. फ्रेडी ने लिखा, 'बॉलीवुड का न्यूटन नियम, जैसे-जैसे गहराइयां की रिलीज डेट पास आती जाएगी, कपड़े छोटे होते जाएंगे.' फ्रेडी ने इस पोस्ट से दीपिका पादुकोन पर तंज कसा था. वहीं जवाब में दीपिका ने लिखा, 'वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रम्हांड प्रोटॉन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉनों से बना है... पर वो मूर्खों के बारे में बताना भूल गए.' दीपिका के इस पोस्ट को फैन्स ने खूब पसंद किया. वहीं उनके इस पोस्ट के बाद फ्रेडी ने एक और पोस्ट किया. फ्रेडी ने लिखा, 'डियर दीपिका, मैं छोटे कपड़े पहनने पर आपका मजाक नहीं बना रहा था. आप पैरों की उंगलियों से कानों तक हेमलाइन पहन सकती हैं, मुझे इसकी परवाह नहीं. मुझे 'मूर्ख' कहने के लिए शुक्रिया. ये इकलौती सच्ची (नॉन फेक) चीज है जो आपने अपने करिअर में कही है.' फ्रेडी ने अपना इंस्टाग्राम प्राइवेट कर दिया है.

फोन से चिपकी रहती हैं अनन्या

दीपिका पादुकोन ने अनन्या पांडे की खिंचाई की है. उन्होंने अनन्या की एक आदत के चलते उनकी तुलना 'प्रधानमंत्री' से की. अनन्या के हर वक्त फोन से चिपके रहने की आदत पर दीपिका ने उन्हें 'प्रधानमंत्री' कहा. इस पर अनन्या ने बताया कि वह फोन पर काम करती रहती हैं. दीपिका ने कहा कि अनन्या शॉट्स के बीच सबसे ज्यादा फोन यूज करती है.

शहनाज़ की ईमानदारी परिणीति को पसंद

एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा ने बिग बॉस-13 फेम शहनाज गिल की तारीफों के पुल बांध डाले हैं. उन्होंने लिखा है, 'उनकी (शहनाज) जर्नी काफी इंस्पायरिंग रही है.' उन्होंने शहनाज की ईमानदारी की भी तारीफ की है. इन दिनों परिणीति शो 'हुनरबाज' को जज कर रही हैं. वहीं टीवी एक्ट्रेस दलजीत कौर इस समय शहनाज की वजह से बुरा फंस चुकी हैं. दलजीत ने बिग बॉस-15 के लिए शहनाज की परफॉर्मेंस वाले वीडियो को अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया था. उन्होंने सैड इमोजी शेयर की थी. शहनाज के कुछ फैंस को ये बात पसंद नहीं आई और वो दलजीत को भला-बुरा कहने में जुट गए. वहीं दलजीत ने सफाई दी है कि उन्होंने ये इमोजी इस वजह से शेयर की थी क्योंकि वो शहनाज की भावनाओं को समझ रही थीं. वो उसी स्टेज पर परफॉर्म कर रही थीं जहां पर वो कभी सिद्धार्थ शुक्ला संग हुआ करती थीं.

टैलेंटलेस नोरा

नोरा फतेही का एक इंटरव्यू तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने कई सारे खुलासे किए हैं. नोरा ने कहा, 'यहां तुम्हारे जैसे बहुत लोग हो गए हैं, हमारी इंडस्ट्री तुम्हारे जैसे लोगों के चलते परेशान हो गई है. तुम हमें नहीं चाहिए'. नोरा एक कास्टिंग डायरेक्टर पर चिल्ला-चिल्ला कर यह बातें कह रही थीं. नोरा की मानें तो उस कास्टिंग डायरेक्टर ने उन्हें टैलेंटलेस तक कह दिया था, यह सब बातें सुन उन्हें रोना आ गया था. लेकिन बाद में उन्होंने अपनी मेहनत के बदौलत सब कुछ हासिल कर लिया. कभी हार नहीं मानी.

Gadgets ज़ोन

मल्टीप्रोटेक्शन टेक्नोलॉजी से लैस चार्जर

यह पोर्टेबल चार्जर 65 वॉट की पावर प्रदान करता है और बहुत कम जगह में भी डिवाइसेज को चार्ज कर देता है. यह 45 वॉट यूएसबी-सी पोर्ट के माध्यम से फुल स्पीड में डिवाइस को चार्ज कर सकता है. एटम III एक बार में 4 गैजेट्स को चार्ज कर सकता है. इसकी पावर आईक्यू टेक्नोलॉजी किसी भी डिवाइस को काफी हाई स्पीड से चार्ज करती है. यह चार्जर सभी एपल गैजेट्स, जिसमें मैकबुक, आईपैड, आईफोन और अन्य डिवाइसेस को आसानी से चार्ज कर सकता है. इस चार्जर को मल्टीप्रोटेक्शन टेक्नोलॉजी से लैस किया गया है, जिसमें टेंपरेचर कंट्रोल, ओवरलोड प्रोटेक्शन जैसे आधुनिक सेफ्टी फीचर्स शामिल हैं.

एनएलसी इंडिया लिमिटेड ने निकाली अप्रेंटिस पदों पर भर्ती

एनएलसी इंडिया लिमिटेड ने अप्रेंटिस पदों को भरने के लिए योग्य व इच्छुक उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए हैं. एनएलसी इंडिया की इस भर्ती में आवेदन के लिए इच्छुक व योग्य अभ्यर्थी ऑफिशियल वेबसाइट **nlcindia.in** पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. एनएलसी के इस भर्ती अभियान में कुल 550 पदों के लिए योग्य उम्मीदवारों का चयन किया जाना है. इस भर्ती के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन 1 फरवरी से शुरू हो चुके हैं और 10 फरवरी लास्ट डेट रहेगी.

IOCL

इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL) ने अप्रेंटिस पदों पर भर्ती के लिए योग्य व इच्छुक उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए हैं. वेबसाइट iocl.com पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. अंतिम तिथि 15 फरवरी 2022 है. आईओसीएल के इस भर्ती अभियान से कुल 570 पदों को भरा जाएगा.

एनएचपीसी

एनएचपीसी लिमिटेड ने जूनियर इंजीनियर के 133 पदों पर भर्ती के लिए इच्छुक उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए हैं. योग्य अभ्यर्थी कंपनी की वेबसाइट nhpcindia.com पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. इस भर्ती के लिए आवेदन की लास्ट डेट 21 फरवरी 2022 है. एनएचपीसी के इस भर्ती अभियान के तहत कुल 133 पदों के लिए योग्य उम्मीदवारों का चयन किया जाएगा.

नियुक्ति वार्ता

CISF

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF) ने कांस्टेबल के 1149 पदों पर भर्ती के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित किए हैं. योग्य अभ्यर्थी सीआईएसएफ की वेबसाइट cisfrectt.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं. इस भर्ती के लिए आवेदन 4 मार्च 2022 तक ही किए जा सकते हैं.

TV मैजिक

शमिता पर नागिन की फुफकार

तेजस्वी प्रकाश टीवी के कंट्रोवर्शियल शो बिग बॉस-15 की विनर बन चुकी हैं. उनकी जीत के साथ ही सोशल मीडिया पर लोग दो गुटों में बंट चुके हैं. कई लोगों का मानना है कि तेजस्वी को इस वजह से विनर बनाया गया क्योंकि वो कलर्स चैनल के कई शो कर चुकी हैं. वहीं कुछ लोगों ने ये भी कहा कि तेजस्वी को चैनल ने इसलिए विनर बनाया क्योंकि वो नागिन-6 की स्टारकास्ट में शामिल हो गई हैं. यूजर भावना सोमाया ने लिखा है, 'मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि शमिता बिग बॉस-15 की विनर नहीं बनीं क्योंकि वो शिल्पा की बहन हैं. तेजस्वी को इसलिए विनर बनाया गया है क्योंकि वो चैनल के सीरियल की नई नागिन हैं. मेरी राय में तो चैनल के कलाकारों को अयोग्य ही घोषित कर देना चाहिए. इस ट्वीट पर ही शमिता का रिएक्शन आया है.

शमिता ने ट्वीट के जवाब में लिखा है, 'मैं क्या ही कहूं...शुक्रिया..आपके प्यार और आपके इस ईमानदार ओपिनियन के लिए...लव यू,,,.' वहीं तेजस्वी ने कहा है कि लोगों को लगता है कि नागिन-6 की वजह से उन्हें बिग बॉस-15 की ट्रॉफी मिली है लेकिन ऐसा नहीं है. मेरी जीत मेरी जीत है, मुझे इसलिए नहीं विनर बनाया गया है कि मैं नागिन करने वाली हूं. अगर मैं बिग बॉस नहीं भी जीत पाती, तो भी तो मैं ये शो करती ही.

पुरुष मंडल ने बनाया पार्टी का प्लान

शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की कहानी में गोकुलधाम सोसाइटी के पुरुष मंडल के सदस्य जेठालाल के बिजनेस प्लेस गड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स पहुंचते हैं. वहां एकमत होकर पार्टी की प्लानिंग बनती है जिसके लिए सोढ़ी रेस्टोरेंट जाने का सुझाव देते हैं. लेकिन डॉ. हाथी उनको कोरोना प्रतिबंधों की याद दिलाते हैं और पार्टी का प्लान चौपट हो जाता है. वहीं पोपटलाल एक ऐसा उपाय बताते हैं जिससे सभी की मुस्कान लौट आती है. पोपटलाल सभी को 'भोपू दा ढाबा' यानि उनके घर पर पार्टी करने का सुझाव देते हैं. इस पार्टी का सीक्रेट चंपकलाल और महिला मंडल को पता नहीं है. यह शो सब टीवी पर प्रसारित होता है.

बदल सकते हैं हम जहां को...

ज़िन्दगी जीने का अदाज़ पुस्तक अवश्य पढ़ें

रिज़वान एजाज़ी

आपका चेहरा, पोशाक, सधी हुई चाल, बातचीत का अन्दाज़, व्यवहार, कर्म इस तरह हों कि हर कोई आपसे प्रभावित हो जाये, आपकी निकटता पसन्द की जाये, आपकी प्रशंसा हो, आपको आदर्श मानकर आपका अनुसरण करने की क़ोशिश की जाये। आप एक मिसाल बन जायें, इतिहास में आपका नाम हमेशा रोशन हो।

ज़िन्दगी हो तो ऐसी हो।

क्या वास्तव में आप उक्त पंक्तियों को अपने जीवन में उतारना चाहते हैं तो आज से, अभी से, इसी समय से शुरूआत कर लें।

मेरे कुछ मित्र कहते हैं कि पुस्तक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ईमानदार बनो, चोरी मत करो, अच्छा नागरिक बनो, वगैरह-वगैरह पढ़ने, सुनने भर से कोई आज तक सुधरा है? यह सभी तो धार्मिक पुस्तकें, प्रवचन, हजारों लाखों पुस्तकों में लिखा है, पढ़ा गया है, फ़िर भी चोरी, बेईमानी समाज में क़ायम है।

परन्तु मेरा मानना है कि यदि आपने बदलाव लाने का ठोस निर्णय ले लिया है, थोड़े से प्रयास से अपनी आदत में बदलाव ला सकते हैं।

रात के बारह बजे डरावनी फ़िल्म देखकर आप घर लौटे, अंधेरा कर बिस्तर पर लेटे हैं, मनमस्तिष्क पर डरावनी फ़िल्म के दृश्य घूम रहे हैं। अचानक बिल्ली की आवाज़ आती है, आप बिस्तर से उछल जाते हैं। माथे पर पसीना आ जाता है, क्योंकि आपके दिमाग़ पर डर हावी है। दूसरी रात को डर अस्सी प्रतिशत कम हो जायेगा। तीसरा रात को हल्का फुल्का याद रहेगा। चौथी रात को बिल्ली का पूरा ख़ानदान आ जाये तो भी आपको डरा नहीं सकता। क्योंकि आपकी याददाश्त से उस फ़िल्म का असर धीरे-धीरे समाप्त हो चुका है। ज़िन्दगी के हर अच्छे बुरे घटनाक्रम इसी तरह याददाश्त में, दिमाग़ के ठंडे बस्ते में खोते जाते हैं, जो किसी ख़ास मौके पर ही याद आते हैं। सैकड़ों चुटकले, शायरी आप जानते हैं परन्तु ज़रूरत के वक़्त एक भी चुटकला या शेर दिमाग़ में नहीं उभरता है।

मैंने बिना कोई ज्ञान बघारे, अपनी विद्वता का प्रदर्शन किये बिना, सीधे सपाट अंदाज़ में अपने जीवन में आने वाले छोटे, बड़े संस्मरणों को सच्चे दिल से इस क़िताब के माध्यम से आप तक पहुंचाने का प्रयास किया है। और मैं जानता हूँ कि दिल से निकली बात, दिल में समाती है।

मुझे विश्वास है कि आपको यह किताब अच्छी लगेगी, आप कुछ भी बदलाव अपने में लाने का प्रयास करेंगे, विचार करेंगे कि नहीं मुझे भी अब यही करना है परन्तु रोज़मर्रा की भागदौड़, व्यस्तताओं में आपका बदलाव का कार्यक्रम वैसे ही दिमाग के ठंडे बस्ते में चला जायेगा वैसे कि डरावनी फ़िल्म का डर।

जीवन में कोई भी अच्छी बुरी आदत हम एक दिन में नही डाल लेते हैं, अपनी कई आदतों से हम स्वयं परेशान हो जाते हैं, हम बदलाव भी चाहते हैं परन्तु बदल नहीं पाते हैं क्योंकि बदलाव मुश्क़िल से ही हो पाता है।

बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है ''विज्ञापन।'' कोई भी नई कम्पनी टीवी, होर्डिंग्स, रेडियो, अख़बार के माध्यम से बार बार आपके मस्तिष्क पर अपने उत्पादन की चोट करते हैं जब तक कि आप एक बार उसे अपना नहीं लेते हैं। वह झूठा, सच्चा विज्ञापन सार्थक तभी होता है जब उसमें वास्तव में श्रेष्ठता होती है वरना जीवन की वास्तविकता में आपने कभी किसी को साबुन हाथ में लेकर नाचते गाते देखा है।

कोई भी बुरी या अच्छी आदत हम एक दिन में नहीं बदल सकते।

अब देखिये आदत कैसे पड़ती है?

आज से कुछ वर्षों पहले गुटख़ा संस्कृति कतई नहीं थी, फिर धीरे-धीरे समाज इसकी गिरफ़्त में आता चला गया।

देखिये नया शिकार कैसे फंसता है?

टीवी पर विज्ञापन देखता है, ''ऊंचे लोग, ऊंची पसंद।'' वह शिकार घर से बाहर निकलता है, सामने बड़ा सा चमचमाता होर्डिंग टंगा है, ''ऊंचे लोग, ऊंची पसंद।''

स्कूल, कॉलेज, कार्यालय में पहुंचता है, उसके साथी बड़ी शान से पाउच खोल कर मुँह में उंडेलते हैं, संतुष्ट होकर मुँह चलाते हैं।

नया शिकार बार बार यह सब देखता है। देखते-देखते उसका दिल भी मचल जाता है। अब कोई संगी साथी उसकी तरफ़ हथेली बढ़ाता है जिस पर वहीं ज़हरीला नुस्ख़ा रखा है। थोड़ी ना नुकुर, थोड़ी झिझक के बाद थोड़ा सा वह उसमें से उठा लेता है। उसके कसैले, तीखे स्वाद के बाद उसका मुँह का ज़ायका बिगड़ता है लेकिन अब वह उसकी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गया है। अब मुँह में रखकर वह संतुष्टि का अनुभव कर रहा है। चक्र यहीं समाप्त नहीं हुआ है। वह अब अपनी हथेली को दूसरों के सामने करके उसे आमंत्रित कर रहा है।

यह चक्र उसी जलकुम्भी की तरह पूरे तालाब पर छा जाता हे जो एक कोने से प्रारम्भ होती है।

यदि वास्तव में इस किताब के किसी अच्छे भाग को अपने जीवन में सम्मिलित करना चाहते हैं तो तुरन्त उस पर हाईमार्कर पैन से निशान लगा लें। एक सुन्दर सी नोट बुक में सुन्दर अक्षरों से लिख लें।

अपने ऑफ़िस, पढ़ने की टेबिल, बिस्तर, वॉश बेसिन के सामने दर्पण पर मोटे मोटे अक्षरों में लिख लें। अपने मित्र, भाई, बहन, माता, पिता, पत्नी, सहयोगी, प्रेमी, प्रेमिका जिसके भी आप निकट रहते हैं, उनसे चर्चा करें कि आपकी ज़िन्दगी बदल रही है। मैं अब सिगरेट छोड़ रहा हूँ या वक़्त का पाबन्द बन रहा हूँ, या झूठ नहीं बोलूंगा, गाली नहीं बोलूंगा। अब मैंने यह नियम बना लिये हैं, नियम तोड़ने पर मुझे टोकें, जुर्माना वसूल करें। बार-बार लगातार प्रयास से आप अवश्य अपनी नई ज़िन्दगी प्रारम्भ कर सकते हैं।

रस्सी की लगातार रगड़ से पत्थर तक घिस जाता है। इस क़िताब को या क़िताब के उस भाग को जिसे आप ज़िन्दगी में शामिल करना चाहते हैं उसे बार-बार पढ़े। तब तक पढ़े जब तक कि आपकी आदत नहीं पड़ जाये या आदत नहीं छूट जाये, जब तक कि आप भी शिकार न बन जाये।

यही तो उद्देश्य है इस क़िताब का।

जो अच्छी आदतें मैंने अच्छे लोगों से सीखी हैं, उनकी जानकारी आप तक पहुँचाऊं। इस क़िताब का उपयोग आप दर्पण की तरह करें, जिसमें आप अपने चेहरे के हर अच्छे बुरे पहलू को देख सकें, जो गन्दगी चेहरे पर है उसे साफ़ कर सकें। फ़िर एक दिन मुझे आपका पत्र या फोन आये कि मैंने भी अपने जीवन में यह सुधार कर लिया है तो भला इससे बेहतर खुशी मेरे लिये और क्या हो सकता है।

किसी को भला जीवन में और क्या चाहिये? यदि आप अपने जीवन से दूसरे के जीवन को प्रभावित कर उसे अपना बना लें।

बसंत पंचमी मनाई

पिपरिया। नगर के सर्वोदय विद्या पीठ हायर सेकेंडरी स्कूल में बसंत पंचमी का त्यौहार हवन पूजन व सम्मान समारोह के साथ मनाया गया।

इस मौके पर मां सरस्वती जी का विशेष पूजन अर्चन व हवन किया गया । संस्था प्रमुख आनंद प्रकाश शर्मा, ममता शर्मा, प्राचार्य श्री भगवती प्रसाद तिवारी, प्रभारी प्राचार्य श्रीमति स्नेहलता दुवे, प्रधानाचार्य श्री मति अंजु जाटव, व स्टाफ के सहयोग से सम्पन्न हुआ तदुपरांत संस्था प्रमुख आनंद प्रकाश शर्मा को शिवोहम पुस्तक के लिए इस वर्ष का प्रतिष्ठित गोल्डन बुक अवार्ड प्राप्त होने की खुशी में शाला परिवार ने आनंद प्रकाश शर्मा का सम्मान किया व आपकी इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर प्रकाश डाला। गोल्डन बुक अवार्ड के सीईओ मानिका सिंह का भी धन्यवाद अदा किया। ये अवार्ड इंडियन आर्थर एशोसिएशन की एल सी कम्युनिटी, सुपरफास्ट आर्थर व वरेन फ्लेस विजनेस गुरुकुल का संयोजन था। इसमें देश दुनिया से पांच हजार पुस्तक व लाखों प्रतिष्ठित लेखकों ने प्रविष्टि दर्ज की थी तथा 40 विभिन्न श्रेणियों में से थे। सम्मान इस वर्ष 35 सर्वश्रेष्ट कृतियों व रचनाओं को दिए गए। इसमें सदगुरु जी की कर्म, दलाई लामा जी की दी लिटिल एकरोजमेंट, चेतन भगत जी की 400 ष्ठङ्घ्य, अमिश त्रिपाठी जी की लीजेंट आयु सोडलडे, सुधामूर्ति जी की सुधामूर्ति, इंदिरा नूयी जी की माय लाइफ इन फुल वर्ड फेमिली आर फ्यूचर, प्रियंका चौपड़ा की अनफिनिष्ड अन्य महत्वपूर्ण रही।

कार्यक्रम का संचालन वेद प्रकाश व्यास जी ने किया व विशेष सहयोग ज्योति मेहरा, शशि मालवीय, नर्मदा प्रसाद का रहा।

ज्योतसना राजस्थान इकाई अध्यक्ष बनी

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। साहित्यक सांस्कृतिक संस्था रचनाकार की राजस्थान इकाई का अध्यक्ष ज्योत्सना सक्सेना को बनाया गया है। रचनाकार संस्थापक सुरेश चौधरी ने राजस्थान इकाई की घोषणा की। लक्ष्मण रामानुज लडीवाल को उपाध्यक्ष, आशा पांडे ओझा महासचिव, शालिनी श्रीवास्तव, कुलदीप गुप्ता साहित्य मंत्री, प्रमिला शरद व्यास को संस्कृति मंत्री बनाया गया। जबकि कार्यकारिणी में निर्मला शर्मा, बीना चित्तौड़ा, विमला नागला, सुमित्रा माथुर को शामिल किया गया है।

माँ की स्मृति में बही काव्य की रसधारा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। गत रविवार को अंतर्राष्ट्रीय साहित्यक एवं सांस्कृतिक संस्थान रचनाकार ने स्व. दुर्गावती चौधरी स्मृति काव्य गोष्ठी के रूप में विराट कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जिसमें पूरे भारत से 30 कवियों ने कविता, गीत, ग़ज़ल, छन्द आदि सुनाकर आयोजन को उच्चयाम पर पहुँचाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कोलकाता से संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष सुरेश चौधरी ने की। मुख्य अतिथि की भूमिका कोलाकाता से श्रीमती विद्या भंडारी ने निभाई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन पटना से आराधना प्रसाद जी और कोलकाता से मौसमी प्रसाद ने किया। इस कार्यक्रम में डा. सुभाष सिंह कटनी, महिमा सोनी, बैंगलोर, दर्शन सिंह, हैदराबाद, जुही जाह्नवी कोलकाता, सुमन मिश्रा झांसी, ज्योत्सना सक्सेना, जयपुर, नवीन सोलंकी, आचार्य राहुल शर्मा फिरोज़ाबाद आदि ने काव्य सरिता बहाकर श्रोताओं का मन मोहा। कार्यक्रम का समापन संस्थान की महा सचिव विद्या भंडारी ने धन्यवाद ज्ञापन कर किया।

कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का शिलान्यास 9 फरवरी को

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत करेंगे इस परियोजना का शिलान्यास

दिल्ली की तर्ज पर जयपुर के विधायक नगर (पूर्व) में बनेगा कॉन्स्टीट्यूशन क्लब

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 2021-22 के बजट में की थी घोषणा

विधायक नगर (पूर्व) की 4 हजार 950 वर्ग मीटर भूमि पर बनेगा यह क्लब

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा यह क्लब

हैरिटेज रूप में किया जाएगा निर्माण, 80 करोड रूपये आएगी लागत

आवासन मण्डल करेगा रिकॉर्ड 18 माह में क्लब का निर्माण

हिलव्यू समाचार

जयपुर। आवासन आयुक्त पवन अरोडा ने बताया कि 9 फरवरी, 2022 को जयपुर के विधायक नगर पूर्व में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा बनाये जाने वाले कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का शिलान्यास किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा वर्ष 2021-22 की बजट घोषणा में राजस्थान विधानसभा के सदस्यों के लिये कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली की तर्ज पर कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान बनाये जाने की घोषणा की गई थी। इस क्लब को बनाये जाने हेतु राजस्थान आवासन मण्डल को क्रियान्वयन संस्था बनाया गया था। आयुक्त अरोडा ने बताया कि इस क्लब का निर्माण राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा निर्माणाधीन विधायक आवास परियोजना के तहत् ही किया जायेगा। विधायक आवास परियोजना परिसर में कॉन्स्टीट्यूशन क्लब हेतु आवश्यक भूमि उपलब्ध नहीं होने के कारण विधायक नगर पूर्व की भूमि पर यह क्लब बनाया जाएगा। यह क्लब 4 हजार 950 वर्ग मीटर भूमि पर बनाया जाएगा।

आयुक्त ने किया था कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली का दौराः मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के निर्देश पर आवासन आयुक्त पवन अरोडा की अध्यक्षता में आवासन मण्डल की कमेटी ने कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली का दौरा कर क्लब के बारें में पूरी जानकारी प्राप्त की थी।

मंत्रिमण्डलीय उप समिति ने किया कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान की डिजाईन का अनुमोदनः आवासन आयुक्त ने बताया कि मण्डल द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए अल्प समय में आर्किटेक्ट से कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान का डिजाईन/परिकल्पना भी तैयार करवा ली गई। इस डिजाईन/परिकल्पना का प्रस्तुतीकरण मण्डल द्वारा मंत्रिमण्डलीय उप समिति के समक्ष किया गया। मंत्रिमण्डलीय उप समिति द्वारा सर्व सम्मति से मण्डल द्वारा तैयार डिजाईन/परिकल्पना का अनुमोदन किया गया।

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा यह क्लबः राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा बनाये जाने वाला यह क्लब अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा। इस क्लब में रेस्टोरेन्ट, कॉफी हाउस, स्विमिंग पूल, ऑडिटोरियम, मीटिंग एण्ड कॉन्फ्रेन्स हॉल, जिम, सैलून, बैडमिन्टन एण्ड टेनिस कोर्ट, बिलियर्डस् व टेबल टेनिस, इन्डोर गेम्स सहित अतिथियों के ठहरने हेतु गेस्ट रूम्स का भी प्रावधान किया गया है।

निर्मित क्षेत्रफल होगा 1 लाख 84 हजार 480 वर्गफीट, 80 करोड रूपये की आएगी लागत : उन्होंने बताया कि इस क्लब का निर्मित क्षेत्रफल 1 लाख 84 हजार 480 वर्गफीट होगा। इस क्लब के निर्माण पर 80 करोड रूपये की राशि व्यय होगी। राज्य सरकार द्वारा इस संबंध में प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी कर दी गई है। यह राशि जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा मण्डल को उपलब्ध करवाई जाएगी।

आवासन मण्डल द्वारा रिकॉर्ड 18 माह में करवाया जाएगा क्लब का निर्माणः राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा इस कॉन्स्टीट्यूशन क्लब के निर्माण के लिये निविदा प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है। इस क्लब के निर्माण की समय सीमा 18 माह निर्धारित की गई है।

ग़ज़ल

रंग चेहरा भाव अश्रु नेह मोह प्रांजल विरह
मेह की धारा को धारे अल्पना है प्रीत है
छन्द मात्रा लय गति सब खंड है बेशक मगर
भावना जो बह गई जो लय बने वो गीत है
अर्थ वैभव गुण असर सब आप का परिचाय है
सत्य है एकमात्र जो कैवल्य है पर्याय है
वर्ष मौसम दिन दिशाएँ जानते हैं हम यही हैं
काल को मापा युगों में, और युगों से हम यही हैं
ज्ञान की लौ जला अंधियार को छांटा है हमने
रोशनी चहुंओर पहुँची, हां परंतु हम यही है
शांति के आमुख में फैला बुद्ध का संगीत है
शक्ति को धारण किए अलमस्त डमरू गीत है
अंबिका सौभाग्य सा वैधव्य को जिसने जीया
जिंदगी से क्या शिकायत क्या लिया और क्या दिया
साँस से लिपटी दुशाला ओस पीछा कर रही है
कामनाओं की त्रिशला नीर बनके बह रही है
धैर्य की व्याकुल प्रबाहु में छिपी जो वर्तनी है
चंद सुधियों को समेटे आंसुओं में ढल रही है
देख ख़ुद को ही बराबर हार है क्या जीत है
हर तरफ अनमित रुदन है चुप सुभद्रा गीत है
चाहतें उम्मीद सब व्यापार है और कुछ नहीं
सुख को तौले धन महज संचार है सब कुछ नहीं
दिल में उकरी कुछ लकीरें सामने कोई नहीं है
याद में खोयी है काया दिन गए सोयी नहीं है
भग्न तिय के वक्ष पे कुछ फूल और एक चित्र है
नेह से निखरी है नेहा भीड़ में रोयी नहीं है
नींद में छूता गुज़रता ख़्वाब का मनमीत है
सोते जगते उठते खोते डूब जाना गीत है
आस्ताँ के उस तरफ नव कल्प का प्रारंभ है
अंत तो कुछ भी नहीं है इक नया आरंभ है
है अमर अंकित पराक्रम भारती के अंक में
शौर्य के जय घोष का जो नाद है वो गीत है
रंग चेहरा भाव अश्रु नेह मोह प्रांजल विरह
मेह की धारा को धारे अल्पना है प्रीत है
छन्द मात्रा लय गति सब खंड है बेशक मगर
भावना जो बह गई जो लय बने वो गीत है।।

शिवम तिवारी
आरा, बिहार

हमारे प्यारे वन्य जीव: लिंक्स कैट्स

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों मुझे पक्का पता है कि आपने बॉबकैट के बारे में तो सुना ही है, है न? चलिये मैं आज आपको कैट परिवार के लिंग्स नामक सदस्य के बारे में बताती हूँ, क्योंकि इसके बारे में हम हिंदुस्तान में ज़्यादा बात नहीं करते, और मैं चाहती हूँ कि मेरे देश के बच्चों को ये पता होना ज़रूरी है। ठीक है न बच्चों?

ऐसा माना जाता है कि कैट परिवार का ये जन्तु प्लियोसीन युग के अंत और प्लेस्टोसीन युग की शुरुआत के बीच में यूरोप और अफ्रीका में पाये जाने वाले जानवर से इवॉल्व हुआ है ।

आज की तारीख़ में लिंग्स की चार प्रजातियाँ पाई जाती हैं -

1) यूरेशियन लिंग्स
2) कैनेडियन लिंग्स
3) आईबेरियन या स्पैनिश लिंग्स
4) रेड लिंग्स या बॉबकैट

ये नाम इन जगहों में पाये जाने के कारण ही रखे गये हैं। अलग अलग हैबिटैट्स के

क्लाइमैटिक कंडीशंस अलहदा होने की वज़ह से इनका अपीयरैंस भी ज़रा-बहुत अलग सा हो जाता है, मसलन इनका कद या स्किन कलर। इनकी संख्या इनडेन्जर्ड तो नहीं है पर इनके हैबिटेट में मिलने वाले भोजन की उपलब्धता के अनुसार वो घटती-बढ़ती रहती है और कई बार एक्सटर्पेट भी हो जाती है। जैसे आजकल यूरेशिया लिंग्स की तादाद नगण्य होने के कारण इन्हें यूरोप में दुबारा इंट्रोड्यूज़ किया जा रहा है ।

यूरेशिया के लिंग्स साइबेरिया, सेंट्रल एशिया से यूरोप के जंगलों तक में पाये जाते हैं, और चारों में यही आकार में सबसे बड़े होते हैं। इनके शरीर का कोट समर में छोटा और रेड ब्राउन रंग का होता है जो विंटर्स में थिक होकर ग्रेइश कलर में बदल जाता है। वैसे तो ये ऑपोर्चूनिस्टिक प्रिडेटर्स होते हैं और कोई भी जानवर जो इनके वश में आ जाये खा लेते हैं, लेकिन अपने इलाक़े में पाये जाने वाले 'रो-डियर' इनके पसंदीदा आहार हैं। रो डिअर यूरोप और साइबेरिया आदि ठंडे प्रदेशों में पाये जाने वाली डिअर की प्रजाति है, जो इन्हीं की तरह समर में रेड या ब्राउन रंग से विक्टर में ग्रे रंग में परिवर्तित हो जाती है।

डॉ कविता माथुर

तेरी दया से माँ...

हर शब्द में श्रृंगार है, तेरी दया से माँ,
वीणा में ये झंकार है, तेरी दया से माँ.
तेरी कृपा से ताल - छंद, भाव - गीत है
हर द्वार पे है ज्ञान - दीप , सुर - संगीत है
साहित्य का संसार है, तेरी दया से माँ.
तेरे शरण में भक्त हैं कब से खड़े हुए ,
विश्वास पूर्ण नेत्र में श्रद्धा भरे हुए ,
भावों में निर्मल धार है तेरी दया से माँ .
अज्ञान में फँसे है जो, उन्हें रास्ता दिखा ,
हर लेखनी को सत्य की पहचान तू सिखा,
हृदय में जो विचार है तेरी दया से माँ .
राष्ट्र के उत्तुंग पे तू साजती रहे ,
काव्य के हर मंच पे विराजती रहे ,
धरती पे जो संस्कार है तेरी दया से माँ

डॉ कल्याणी कबीर
झारखंड

शहीद की शहादत

न वो हिन्दू न वो मुस्लिम
न ही सिख - ईसाई है
वो तो भारत देश का एक सच्चा सिपाही है
घर - परिवार से ज्यादा उसने
देश को अपने जाना है
अपनी माँ से ऊपर उसने
भारत माँ को माना है
राष्ट्रप्रेम से अधिक किसी से
प्यार नहीं वो करता है
जीता है वो देश की ख़ातिर
देश की ख़ातिर मरता है
तिरंगे की शान बनाए रखना
उसकी ज़िम्मेदारी है
इसीलिए तो करता वो
सहरद पर पहरेदारी है
न वो हिन्दू न वो मुस्लिम
न ही सिख - ईसाई है
वो तो भारत देश का एक सच्चा सिपाही है
दुश्मन से ली टक्कर उसने
सीने में गोली खाई है
डटा रहा वो तब तक
जब तक मौत न खुद से आई है
देश की रक्षा की खातिर
उसने जान गंवाई है
माँ का लाल
पिता की शान
किसी बहिन का भाई है
पत्नी का सिंदूर है वो
बच्चों की परछाई है
वो तो भारत देश का एक सच्चा सिपाही है
रग - रग से फूटता उसके
जय हिन्द का नारा है
अंत समय में भी वो कहता
भारत देश हमारा है
तिरंगे में लिपटे बेटे को देख
पिता का सीना वज्र हुआ
माँ का आंचल सूना हो गया
पत्नी का सिंदूर मिटा
कितने बच्चे अनाथ हो गए
पिता का साया छूट चला
बहिन की राखी का धागा
पंचतत्त्व में लीन हुआ
कितने सूरज अस्त हो गए
कितने घर मातम छाई है
जवानो की शहादत पर तो
पृथ्वी भी कंपकपाई है
न वो हिन्दू न वो मुस्लिम
न ही सिख - ईसाई है
वो तो भारत देश का एक सच्चा सिपाही है।

डॉ. मनोरमा गौतम
नई दिल्ली

कविता

तिरंगा

राष्ट्र-गौरव का प्रतीक तिरंगा
राष्ट्रीयता का प्रतीक तिरंगा
फहर फहर फहराता है
हमें वीर शहीदों की कुर्बानी
पल पल याद दिलाता है
नमन भगत सिंह अशफ़ाक को
नमन राजगुरु सुखदेव को
जो गुलामी की जंजीरों से
भारत माँ को आज़ादी दिला गए
सरहद की रक्षा हित जिए मरे
ओढ़ तिरंगा, अपनी जां लुटा गए
विश्वशांति का है अग्रदूत ये
अध्यात्म का है चित्रकूट संस्कृति का है देवदूत ये
संप्रभुता का है राजदूत ये
सुख समृद्धि परिचायक ये
किसानों का उन्ननायक ये
प्रगति का अधिनायक ये मान प्रतिष्ठा का गायक ये
गर्जन सर्जन दर्शन ये सत्य सनातन अर्जन ये
अशोक चक्र शांतिवर्षक ये
सदा न्यायपथ पथ प्रदर्शक ये
राष्ट्रगौरव का प्रतीक
तिरंगा
फहर फहर फहराता है हमें वीर शहीदों की कुर्बानी
पल पल याद दिलाता है

ज्ञानवती सक्सैना
जयपुर

अहम

अभी तो हम संभले भी नहीं
अपने प्रियजनों को खोने के गम से,
बिछड़ गए कोई मां-बाप कोई बच्चों से,
घर-घर में गमों ने डेरा जमा लिया।
अभी तो उबर भी ना पाए थे
हम इन दुखों के साए से,
फिर प्रकृति ने अपना कहर बरपाया,
कहीं बारिश में बह गए घर
हजारों लोग हो गए बेघर।
टूट गए बाँध खिसक गई चट्टानें
लील गई हजारों ज़िंदगियाँ,
फिर भी इंसान समझ ना पाया
ना बन पाया अपनों का हमसाया।
अभी भी अपनी ही मैं में जीता
झुकना ना अभी भी सीख पाया,
अब तो कुछ संभल जा इंसान
छोड़ दे अपने इस अहम को,
अब तो कुछ सीख ले तू
प्रकृति के इस कहर से।

रमा भाटी
जयपुर

आओ बसंत

शशि सक्सेना, जयपुर

बस अब आतंक का अंत
करते आओ बसंत
धरा ने धारण किया पीत
शांति का विश्वास लाओ बसंत
उल्लास पावन सा सबके हृदय
आ बसे, भय का अंत लाओ बसंत
सर्द जुमलों से भीगी भारती
टेसू जैसा सत्य उपजाओ बसंत
सबके हृदय राष्ट्रप्रेम के
पुष्प खिलाते आओ बसंत
बस अब आतंक का अंत
करते आओ बसंत

भिक्षुक

माँगे भिक्षा दान, द्वार पर सब के जाते।
दे दो मुझको दान, स्वयं झोली फ़ैलाते।।
पहने भगवा रंग, माथ में तिलक लगाते।
रख मंजीरा हाथ, भजन भगवन के गाते।।
रुपिया, चाँवल और भोज भी दे दो माई।
कृपा करेंगे आज, स्वयं मेरे रघुराई।।
हम भगवन के भक्त, सभी के घर पर जाते।
करते सदा गुहार, तभी हम भोजन पाते।।
लीला अज़ब रचाय, भीख से करे कमाई।
कैसी माया देख, बड़ी लगती दुखदाई।।
सच्चे मन से लोग, दान हम को तुम देना।
प्रेम दया अरु ज्ञान, साथ में तुम भी लेना।।

प्रिया देवांगन
'प्रियू'
छत्तीसगढ़

'रचनाकार' की राजस्थान इकाई का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

हिलव्यू समाचार

जयपुर। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर 'रचनाकार' संस्थापक सुरेश चौधरी की ओर से राजस्थान इकाई की विधिवत घोषणा की गई। इस अवसर पर वर्चुअली रंगारंग कार्यक्रम में आन्या माथुर व आर्या सूरी ने अपने शास्त्रीय नृत्य के माध्यम से गणेश व मां सरस्वती का आह्वान किया। केंद्रीय समन्वयक रचना सरन व ईश्वर करुण मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन संगीता व्यास ने किया। कवि विजय सिंह नाहटा ने काव्य पाठ किया।

मेरी तमन्नाओं का शहर...

तमन्नाओं का शहर दूर है ज़्यादा
मैंने माना
पर जाना जरूर है
चलने की जिद्द जो ठानी है
कभी तो बसेरा होगा वहां मेरा
माना अब नहीं तो तब
जबकि होगा ना वह इतना ख़ूबसूरत
इतना मनमोहक, जितना है आज
माना ना होगा
उतना अल्हड़ जितना कि आज
और ना ही उतना दिलकश
जितना कि.. आज
पर ... मेरे लिए रहेगा वो हमेशा
मेरे अरमानों का बसेरा
जहां मेरी ख़्वाहिशों की चिड़िया चहचहाएंगी और
उम्मीदों के काफ़िले हक़ीक़त में बदल जाएंगे
तब भी ....जबकि
वह जर हो रहा होगा...
आज है दूर और ओझल मेरी निगाहों से
पर कभी तो वहाँ मेरा बसेरा होगा
मेरी तमन्नाओं का शहर ..
तू कभी तो मेरा होगा

सोनिया सूर्यप्रभा, दिल्ली

बंसत हो जाएँ

ऐ प्रिये ! चलो हम,
परस्पर बसंत हो जाएँ।
उर से उपजी भावनाएँ,
हम नेक कर लें।
अपने दिल की दिशाएँ,
हम एक कर लें।
सुअवसर है चलो हम,
परस्पर धरा-अनंत हो जाएँ।
ऐ प्रिये !....
इन हवाओं में अब,
गज़ब की है रूहानी।
दिलकश धूल में अब,
ज़र्रे-ज़र्रे की है कहानी।
कुसुम औ मधुप सा चलो हम,
परस्पर दयावंत हो जाएँ।
ऐ प्रिये !....
देख परिन्दे को भा गया,
सस्नेह पुनर्मिलन हमारा।
ले ही लिया हमने भी,
ज़्यों एक जनम दुबारा।
प्रेम की पराकाष्ठा पर चलो हम,
परस्पर संत हो जाएँ।
ऐ प्रिये !....

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
(छत्तीसगढ़)

मैं नदिया हूँ मुझे बहने दो

मुझमे में एक अज़ीब सी हलचल है,
जो अंदर अंदर शोर मचाती है
एक क़सक सी है सीने में
जो सही नहीं जाती है।
मेरे किनारे जो आज तुम बैठे हो,
तो मुझको बस इतना कहने दो
मैं नदिया हूँ मुझे बहने दो
मेरी राह में जितने पड़ाव आये मैंने सबका सम्मान किया
उनकी ऊँचाई का, गहराई का, मैंने न कभी अवमान किया
ग़ज़ब सुंदरता है जीवन की,
मुझे मेरी सी गति से जीने दो
मैं नदिया हूँ मुझे बहने दो।
एक ज़गह रुका जो जल मेरा, वो मटमैला हो जायेगा
जीवन तो रहेगा उसमे पर जीवंत उसका मर जायेगा
सागर में मिलकर, खारी होने से पहले, मेरा मीठापन रहने दो
मैं नदिया हूँ मुझे बहने दो
मेरे तल में कितने मोती,कुछ दमक गए और चमक गए
कुछ साथ साथ चले मेरे, कुछ साहिल पे जाके ठहर गए
उनमे मैंने कई रंग भरे, उनकी कई उम्मीदें जीं।
अब अपनी नई राहें चुनने दो ।
मैं नदिया हूँ मुझे बहने दो
पता है, कि पता नहीं
मैं बनूँगी गंगा, या ठहरा नाला
सूखी धरा पर लुप्त हो जाऊंगी
या अपना अमृत छलकाऊँगी
यूहीं तुम से फिर एक बार मिलूं -2
बस इतना नाता रहने दो
मैं नदिया हूँ मुझे बहने दो
मेरा 'मैं' मेरा अहम् नहीं, मेरा भरम नहीं और वहम नहीं
कभी अल्हड़पन हो बचपन का ,
कभी जोश भरा हो यौवन का
कभी संयम धीर ओढ़ लूँ
मुझको तुम, बस 'सरिता' सा रहने दो।
कुछ जता दिया तुमको मैंने, कुछ मेरे भीतर रहने दो
मैं नदिया हूँ मुझको बहने दो
हाँ, मैं नदिया हूँ।

सरिता पंत, दिल्ली

डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया को विलुप्तता से बचाना है

संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

साहित्यकार, लेखक, विचारक राष्ट्र की बौद्धिक निधि होती है - विचारों को पाठकों तक पहुँचाने में प्रिंट मीडिया का अहम रोल

भारत आदि अनादि काल से साहित्य का गढ़ रहा है। हम अगर भारत के इतिहास की गहराई में जाएं तो हमें रामायण, भागवत गीता सहित अनेक भाषाओं के अनेकों साहित्य ग्रंथ के रूप में अनमोल मोती मिलेंगे जो हमारी धरोहर है, हमारी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार के प्रतीक हैं हम भारतीयों ने पीढ़ियों से इस साहित्य को संजोकर रखे हैं और आगे भी हम अगली पीढ़ियों के लिए संजोकर रखेंगे।

साथियों बात अगर हम वर्तमान डिजिटल युग की करें तो हमें इसका आधारभूत सहारा मिला है अपने साहित्य को सुरक्षा से संरक्षित करने का, क्योंकि हस्तलिखित पौराणिक साहित्य की भी एक सीमा होती है और हो सकता था आगे के सैकड़ों हज़ारों सालों में यह विलुप्तता के कग़ार पर होता परंतु डिजिटल क्रांति ने इसे अब असंभव बना दिया है। अब हमें यक़ीन हो चला है कि हमारा आदि अनादि काल का भारतीय साहित्य पूर्णतः सुरक्षित रहेगा।

साथियों बात अगर हम आदि अनादि काल से इस साहित्य को लिखने वालोंकी करें और वर्तमान पीढ़ी में नए साहित्यकारों की करें तो साहित्यकार, लेखक, विचारक राष्ट्र की बौद्धिक निधि होते हैं उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है और उनका सम्मान हमारे हृदय में है भी, परंतु अगर हम गहराई में जाएं तो साहित्यकारों, लेखकों विचारकों के विचार, साहित्य, पाठकों तक पहुंचाने में सबसे बड़ी भूमिका आज प्रिंट मीडिया की है क्योंकि प्रिंट मीडिया बौद्धिक निधि के विचारों को प्रकाशित कर उन विचारों को जीवंतता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जो सराहनीय कार्य है।

साथियों बात अगर हम प्रिंट मीडिया की करें तो इसको हमें मिलकर विलुप्तता से हमें बचाना है, क्योंकि आज हम सब जानते हैं कि प्रिंट मीडिया की वित्तीय हालत नाज़ुक बनी हुई है। मेरा मानना है कि कुछ ही संस्थान को छोड़कर अधिकतम प्रिंट मीडिया संस्थान वित्तीय समस्याओं से जूझ रहे हैं क्योंकि वर्तमान डिजिटल युग में हालांकि पीडीएफ फाइल के सहारे प्रिंट मीडिया का विस्तार, प्रसार बड़ा है परंतु उससे वित्तीय समस्याओं का समाधान नहीं निकलता है बल्कि बढ़ जाता है क्योंकि, आजकल करीब करीब सभी लोगों के पास डिजिटल मोबाइल है और पीडीएफ देख पढ़ लेते हैं यदि कोई खरीदते भी हैं तो 2 से 5 रुपए उसकी कीमत है सिर्फ।

उसके ऊपर भी सोशल मीडिया के कारण विज्ञापनों में भारी कमी आई है और सरकारें, राजनीतिज्ञ, राजनीतिक पार्टी सामान्य,और निजी विज्ञापनों में भी काफी गिरावट आई है जिसके कारण प्रिंट मीडिया की आर्थिक समस्या बढ़ गई है जिसका शासन-प्रशासन को स्वतः संज्ञान लेने की ज़रूरत है और प्रिंट मीडिया को विलुप्तता से बचाने की महत्वपूर्ण ज़वाबदारी भी है क्योंकि यह भी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है।

साथियों बात अगर आम बजट 2022 की करें तो इसमें प्रिंट मीडिया के लिए कुछ शासकीय सहयोग की व्यवस्था का बजट करना था क्योंकि कोरोना काल में पत्रकारों, संस्थान से जुड़े कर्मचारियों को वित्तीय समस्या की भारी परेशानी का सामना करना पड़ा था और शासन प्रशासन द्वारा मामूली राहत की घोषणा पत्रकारों के लिए की गई थी परंतु कोई इसेंटिव या पैकेज नहीं दिया इस पर भी शासन से निवेदन है कि प्रिंट मीडिया कर्मचारियों के लिए संशोधित बजट में एलोकेशन कर कोई राहत पैकेज और प्रिंट मीडिया संस्थानों को भी वित्तीय सहायता राहतकोष का निर्माण करना होगा।

क्योंकि हम अगर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र का बारीकी से विश्लेषण करेंगे तो हजारों मीडिया संस्थान जिसमें मासिक, साप्ताहिक और दैनिक समाचार पत्र शामिल है, बंद पड़े हैं। क्योंकि आज के डिजिटल युग में वह घाटे में चल रहे थे, विज्ञापन आना बंद हो गए हैं, आय का दूसरा कोई साधन, स्त्रोत नहीं है ऊपर से कर्मचारियों, पत्रकारों, ऑपरेटरों का वेतन और ऑफिस किराया, बिजली बिल, नगर पालिका, महानगरपालिका कर सहित अनेकों करो का बोझ।

लॉकडाउन से प्रिंट मीडिया की हालत और भी खराब हुई है जिसका शासन प्रशासन को गंभीरता से रेखांकित कर प्रिंट मीडिया को विलुप्तता से बचाने, किसी वित्तीय, राहत कोष बनाने का रणनीतिक रोडमैप बनाने की ज़रूरत है जिसका निवेदन मैं इस आलेख के माध्यम से कर रहा हूं।

साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो राष्ट्रपति सचिवालय की पीआईबी के अनुसार उन्होंने भी, इस अवसर पर लेखकों और विचारकों को राष्ट्र की बौद्धिक पूंजी बताया जो इसे अपने सृजनात्मक विचारों और साहित्य से समृद्ध करते हैं। 'शब्द' और 'भाषा' को मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार बताते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य समाज की विचार-परंपरा का जीवंत वाहक है। उन्होंने कहा, कोई समाज जितना सुसंस्कृत होगा, उसकी भाषा उतनी ही परिष्कृत होगी। समाज जितना जागृत होगा, उसका साहित्य उतना ही व्यापक होगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया को विलुप्तता से बचाना है। साहित्यकार, लेखक, विचारक राष्ट्र की बौद्धिक निधि होते हैं, उनके विचारों को पाठकों तक पहुंचाने में प्रिंट मीडिया का अहम रोल है तथा बौद्धिक निधि के विचारों को प्रिंट मीडिया प्रकाशित कर विचारों को जीवंतता प्रदान करने की महत्वपूर्ण भूमिका सराहनीय है।

प्रकृति का यौवन काल है वसंत

सर्दी की विदाई और गर्मी के स्वागत का मौसम

सरसों खेतों में उठी फूल, बौरें आमों में उठी झूल, बेलों में फूले नए फूल, पल में पतझड़ का हुआ अंत, आया वसंत, आया वसंत...' कवि सोहनलाल द्विवेदी ने वसंत की खूबसूरती इन पंक्तियों में बखूबी बयां की है. वसंत यानी प्रेम, उल्लास और उमंग का माहौल. वसंत के आने पर न केवल प्रकृति, बल्कि हर व्यक्ति इसके रंग में सराबोर दिखता है. वसंत को यूं ही ऋतुओं का राजा नहीं कहा जाता. ये मौसम का यौवन काल है. जिस तरह यौवन मनुष्य के जीवन में वसंत काल है, उसी तरह वसंत प्रकृति का यौवनकाल है. इस समय प्रकृति अपने अप्रतिम सौन्दर्य को लेकर इठलाती है. इसके आने से सर्दी की विदाई और गर्मी के आने की आहट सुनाई देने लगती है.

पीले रंग का महत्व

वसंत के मौसम में पीले रंग का बहुत ज्यादा महत्व है. मौसम के अनुसार देखें या धर्म के अनुसार, पीले रंग को हमेशा प्राथमिकता दी गई है. इस मौसम में गेंदे के फूल व केसर की क्यारियां महक उठती हैं. खेतों में सरसों अपने पूरे यौवन पर आ जाती है. हिन्दू धर्म में पीला रंग प्रेम और अनुराग का प्रतीक बताया गया है. पीला रंग कृष्ण को भी प्रिय था इसलिए उन्हें पीताम्बर धारण कराया जाता है.

संगीत, साहित्य और कला में महत्वपूर्ण स्थान

भारतीय संगीत, साहित्य और कला में वसंतु ऋतु का महत्वपूर्ण स्थान है. संगीत में एक विशेष राग ऋतु वसंत के नाम पर बनाया गया है, जिसे 'राग वसंत' कहते हैं. वसंत का स्वागत भारत, पश्चिमोत्तर, बांग्लादेश, नेपाल तथा कई अन्य राष्ट्रों में भी बड़े उल्लास के साथ किया जाता है. ऐसा कहा जाता है कि वसंत का त्योहार चीनी लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है. सैकड़ों वर्ष पूर्व चीन में वसंत को नियन कहा जाता था. उस समय नियन का अर्थ भरपूर फसल वाला साल था.

सवाल पर चकरा गए इंटेलेक्चुअल प्रोफेसर

वसंत आया या वसंत आई?

मेरे कॉलेज के दिनों की बात है- एक प्रोफेसर के बारे में विख्यात था कि उनसे अगर कोई सवाल पूछ लिया जाए तो वह जवाब की तह तक पहुंच जाते थे और उस पर उस समय तक मंथन करते रहते थे, जब तक सम्पूर्ण पहलू सामने न आ जाए व प्रश्नकर्ता उत्तर से पूर्ण संतुष्ट न हो जाए. इस कारण से उनकी पीठ पीछे छात्र (जिनमें छात्राएं भी शामिल थीं) उन्हें 'झक्की', 'मेंटल' और न जाने क्या-क्या कुछ कहकर पुकारते थे, लेकिन किसी को उनके विद्वान होने पर या उनकी काबिलियत पर कोई संदेह नहीं था. वह कॉलेज के संभवत: एकमात्र इंटेलेक्चुअल थे, जिनके चर्चे देश-विदेश के विश्वविद्यालयों में भी होते और उनके शोधपत्रों के संदर्भ दुनियाभर की सम्मानित शोध पत्रिकाओं में दिए जाते.

मैंने पूछ लिया सवाल

इन प्रोफेसर के बारे में मेरी जानकारी सिर्फ इतनी थी, जितनी कॉलेज कैंटीन में आपसी चर्चाओं के माध्यम से मिल सकती है, क्योंकि संयोग से मेरा जिन क्लासों में प्रवेश रहा, उनमें उन्हें लेक्चर देने की जिम्मेदारी कभी नहीं दी गई. बहरहाल, एक दिन यह हुआ कि मैं कॉलेज लाइब्रेरी में बैठकर किसी पुस्तक से नोट्स ले रही थी कि प्रोफेसर मेरी बगल वाली कुर्सी पर आकर बैठ गए. मैंने अभिवादन में हल्के से अपना सिर झुकाया, उन्होंने हाथ के इशारे से आशीर्वाद दिया और अपने काम में व्यस्त हो गए. उनके पास बैठने पर मैं अपने नोट्स लेना तो भूल गई और उस सवाल के बारे में सोचने लगी जो कई सप्ताह से मेरे मन में उमड़ रहा था, लेकिन उसका जवाब नहीं मिल पा रहा था. साथ ही यह कशमकश भी थी कि उस सवाल को प्रोफेसर से करूं या न करूं? आखिर हिम्मत करते हुए मैंने लगभग कानाफूसी करते हुए (क्योंकि लाइब्रेरी में जोर से बोलने पर पाबंदी होती है) उनसे पूछा कि क्या मैं उनसे एक सवाल कर सकती हूं? उनके 'हां' में सिर हिलाने पर, मैंने कहा, 'सर, वसंत स्त्रीलिंग होता है या पुल्लिंग', 'वसंत आयी' प्रयोग किया जाएगा या 'वसंत आया'?' वह कुछ सोच में पड़ गए और थोड़ी देर बाद अपने सिर को हाथ से खुजलाते हुए बहुत आहिस्ता से बोले, 'मेरे ख्याल में वसंत स्त्रीलिंग है, हफीज जालंधरी ने अपने 'वसंती तराना', जिसे मल्लिका पुखराज और उनकी बेटी ताहिरा सैय्यद ने बहुत खूबसूरत अंदाज में गाया है, में 'वसंत आयी' प्रयोग किया है.'

कश्मकश का समाधान निकल गया

यह कहते हुए उन्होंने इस गीत की अति धीमे स्वर में कुछ पंक्तियां गुनगुनाई- 'लो फिर वसंत आई, फूलों पे रंग लाई, चलो बे-दरंग, लब-ए-आब-ए-गंग, बजे जल-तरंग, मन पर उमंग छाई, फूलों पे रंग लाई, लो फिर वसंत आई.' थोड़ा रुककर प्रोफेसर बोले, 'हां, 'वसंत आई' ही सही होगा. नजीर अकबराबादी ने भी 'कहां रहेगी चिड़िया, आलम में जब बहार की आकर लगंत हो, फिर आलम में तशरीफ लाई वसंत' लिखा है, तो वसंत स्त्रीलिंग ही होगा. बिमल कृष्ण अश्क ने भी 'वसंत आई' ही लिखा है- 'अब के वसंत आई तो आंखें उजड़ गईं, सरसों के खेत में कोई पत्ता हरा न था'. उत्पल पाठक ने भी 'वसंत आई' ही लिखा है- 'आई वसंत, हर जुबां पे है छाई ये कहानी, आई वसंत की ये ऋतु मस्तानी'.' इस प्रकार अनेक उदाहरण देकर प्रोफेसर साहब ने साबित कर दिया कि वसंत स्त्रीलिंग है और 'वसंत आई' का प्रयोग करना दुरुस्त होगा. मैं उनके उत्तर से संतुष्ट हो गई. मैं खुश थी कि मेरी कश्मकश का समाधान निकल आया था. मैंने प्रोफेसर का शुक्रिया अदा किया और लाइब्रेरी से उठकर चली गई, मेरी क्लास का समय हो रहा था. लेकिन इसके कुछ दिन बाद जब मैं घर लौटने के लिए कॉलेज से बाहर निकल ही रही थी तो उन्हीं प्रोफेसर ने मुझे आवाज देकर रोक लिया. मुलाकात के औपचारिक वाक्यों के बाद उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम्हारे उस दिन के सवाल के बारे में मैंने बहुत सोचा और मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि 'वसंत आई' की जगह 'वसंत आया' अधिक सही है, इसलिए वसंत पुल्लिंग है. अब देखो, कुमार पाशी भी बड़े शायर हैं और उनका शेर है- 'आया वसंत फूल भी शोलों में ढल गए / मैं चूमने लगा तो मेरे होंठ जल गए'. इसी तरह भगवतीचरण वर्मा ने भी 'वसंत आया' लिखा है- 'कलिका के चुम्बन की पुलकन, मुखरित जब अलि के गुंजन में, तब उमड़ पड़ा उन्माद प्रबल, मेरे इन बेसुध गानों में; ले नई साध ले नया रंग, मेरे आंगन आया वसंत'.'

तीन दिन में बदल गया विचार

संक्षेप में यह कि तीन दिन के भीतर 'वसंत' का लिंग बदल गया, वह स्त्रीलिंग से पुल्लिंग हो गया. मेरे पास इन दोनों बातों के समर्थन या विरोध में कोई ठोस तर्क नहीं थे. इसलिए जब प्रोफेसर ने वसंत को स्त्रीलिंग बताया तो मैंने उनकी बात को सहजता से स्वीकार कर लिया और फिर जब वसंत पुल्लिंग हो गया तो मैंने बिना किसी विरोध के उसे भी मान लिया. अब मैं सुकून में थी कि चलो एक प्रश्न का हर पहलू से जवाब मिल गया. लेकिन बात यहीं खत्म होने कहां जा रही थी.

वो अचानक आ धमके घर

कॉलेज गेट की वार्ता के लगभग एक सप्ताह बाद मेरे घर के मुख्य द्वार पर दस्तक हुई, घर में उस समय कुछ मेहमान आए हुए थे, मैं उन्हें छोड़कर दस्तक देने वाले को देखने के लिए गई. दरवाजा खोला तो सामने प्रोफेसर साहब थे. मुझे आश्चर्य हुआ कि आखिर मेरे घर का पता उन्होंने कितनी कठनाई से हासिल किया होगा! खैर, मैंने खुद को संभालते हुए कहा, 'सर, आइये, तशरीफ लाएं.' वह बोले, 'नहीं, मैं जल्दी में हूं. तुम सिर्फ दो मिनट के लिए मेरे साथ बाहर आओ.' मैं सीढ़ियों से होते हुए उनके साथ अपनी कॉलोनी के कंपाउंड में आ गई. सामने ही एक थ्री-व्हीलर खड़ा हुआ था, जिसकी पिछली सीट पर दो अलग-अलग हिस्सों में किताबों के दो ढेर थे. उनकी तरफ इशारा करते हुए प्रोफेसर बोले, 'इसमें जो किताबों का दायां ढेर है उसमें 'वसंत आया' प्रयोग हुआ है और जो बायां ढेर है उसमें 'वसंत आई' के इस्तेमाल का समर्थन है. तुम इन किताबों को पढ़कर मुझे वापस कर देना, और हां, इस थ्री-व्हीलर वाले को किराये के 150 रुपये भी दे देना.' यह कहते हुए प्रोफेसर मुड़कर कॉलोनी के गेट की तरफ बढ़ गए और मैं सोचती रह गई कि काश! लाइब्रेरी में मैंने उस दिन प्रोफेसर से मालूम ही न किया होता कि 'वसंत आई' या 'वसंत आया'?

▲ अंतरा पटेल

बजट- 2022-23

उम्मीदों को अमलीजामा नहीं पहना पाईं वित्त मंत्री

पिछले 2 वर्षों से लगातार कोरोना महामारी के चलते घरों के बिगड़े बजट और 5 वर्षों से कर योग्य कमाई में कोई बढ़ोतरी न होने के कारण मध्यवर्ग को उम्मीद थी कि इस बार इनकम टैक्स स्लैब में जरूर कुछ बदलाव होगा और करदाताओं को राहत मिलेगी. उल्लेखनीय है कि अभी तक सिर्फ 2.5 लाख रुपये की सालाना आय ही पूरी तरह से कर के दायरे से मुक्त है. सभी तरह के डिडक्शन विकल्प छोड़ने पर 2.5 लाख रुपये की और आय इस दायरे में आती है. कहने का मतलब यह कि अगर आप डिडक्शन के सभी तरह के दावों को छोड़ते हैं तो 5 लाख रुपये तक की आय पूरी तरह से कर मुक्त है. करदाताओं को उम्मीद थी कि इस साल सरकार मौजूदा करमुक्त 2.5 लाख रुपये की सालाना आय को बढ़ाकर कम से कम 3 लाख रुपये कर देगी. लेकिन ये उम्मीदें धरी की धरी रह गईं. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इन उम्मीदों को अमलीजामा नहीं पहनाया. इस कारण अभी भी वही टैक्स की व्यवस्था रहेगी, जो 1 फरवरी 2022 के पहले थी.

करदाता रहे खाली हाथ

किए गए कुछ सुधार

इस बार के बजट में यह सुधार जरूर किया गया है कि अब आपको 2 साल पुराने अपने इनकम टैक्स रिटर्न को अपडेट करने की सुविधा मिलेगी. इनकम टैक्स की मौजूदा व्यवस्था के मुताबिक अगर हमारी आय 2.5 से 5 लाख रुपये के बीच है तो हमें इसमें 2.5 लाख रुपये में कर की पूर्णतः छूट मिलती है और शेष 2.5 लाख रुपये में सिर्फ 5 फीसदी का टैक्स देना होता है. लेकिन अगर हम किसी तरह की कोई टैक्स छूट नहीं लेते तो हमें अगली 2.5 लाख रुपये की आय भी पूरी तरह से कर मुक्त होकर मिल जाती है. लेकिन अगर हम कई तरह के मौजूदा डिडक्शन विकल्पों को चुनते हैं तो हमें यह छूट नहीं मिलती. इसी तरह 5 से 7.5 लाख रुपये तक की इनकम में पहले विकल्प के मुताबिक यानी अगर हम किसी तरह के डिडक्शन का लाभ नहीं लेते तो हमें इसमें 10 फीसदी टैक्स देना होगा और अगर हम कई तरह के डिडक्शन की छूट लेते हैं तो फिर हमें 20 फीसदी टैक्स देना होगा. 15 लाख रुपये से ज्यादा की इनकम में दोनों ही विकल्पों में 30 फीसदी का कर देना होगा. कुल मिलाकर कहने की बात यह है कि साल 2022-23 के बजट में आयकर देने वालों को किसी तरह की कोई नई छूट नहीं मिली, अगर 2 साल की इनकम टैक्स रिटर्न को अपडेट करने की सुविधा को छोड़ दें. पिछले 12 वर्षों में यानी 2011 से लेकर अब तक इनकम टैक्स स्लैब में कई तरह की छूट मिली हैं और कई तरह के बदलाव हुए हैं. निश्चित रूप से इसका फायदा यह हुआ है कि टैक्स-पेयर्स बेस काफी बढ़ा है. 31 मार्च 2010 के पहले तक सिर्फ 1.60 लाख रुपये की सालाना इनकम ही टैक्स में छूट की हकदार थी, जिसे 2011 में बढ़ाकर 1.80 लाख रुपये किया गया. इस बार करदाताओं को उम्मीद थी कि शायद टैक्स-लेस इनकम का पहला स्लैब 5 लाख रुपये से ऊपर जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. 2020-21 के बजट में करदाताओं को टैक्स देने के 2 विकल्प दिए गए थे, जबकि इसके पहले साल 2017-18 के बजट में 2.5 लाख रुपये तक की इनकम को टैक्स मुक्त कर दिया गया था और अगली ढाई लाख रुपये की इनकम में आयकर को 10 फीसदी से घटाकर 5 फीसदी कर दिया गया था. दरअसल 2020-21 के बजट में टैक्स देने के जो दो विकल्प दिए गए थे, उनके चलते जो लोग किसी भी तरह के डिडक्शन की सुविधा नहीं लेते, उनको एकमुश्त 5 फीसदी टैक्स में छूट दी गई थी. इस तरह उनकी 5 लाख रुपये तक की इनकम पूरी तरह से टैक्स मुक्त हो गई.

स्ट्रक्चर में हुए कुछ नये बदलाव

इस साल इनकम टैक्स के स्ट्रक्चर में कुछ नये बदलाव भी किए गए जैसे, पीएफ पर मिलने वाले ब्याज को टैक्स स्लैब इनकम में शामिल कर लिया गया. जो कर्मचारी पीएफ में 2.5 लाख रुपये या इससे ज्यादा का अंशदान देते हैं, उन्हें भी टैक्स के दायरे में लाया गया है. हां, इस साल यह छूट जरूर दी गई कि 75 साल से ज्यादा उम्र वालों को टैक्स रिटर्न फाइल करने की जरूरत नहीं रह गई. लेकिन इस उम्र के उन्हीं लोगों को ये छूट मिली, जिनकी इनकम सिर्फ पेंशन या बैंक में जमा ब्याज पर निर्भर है. लेकिन अगर 75 साल की उम्र से ज्यादा के लोगों की भी इनकम के स्रोत पेंशन या बैंक ब्याज दर से इतर हैं, जैसे किसी प्रॉपर्टी पर मिलने वाला किराया, कारोबार या शेयर बाजार आदि से होने वाली इनकम तो उस सबके लिए उन्हें आईटीआर भरने की जरूरत है.

अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरीं सीतारमण

इस साल यह उम्मीद लगाई गई थी कि पिछले 2 साल से लगातार आय में हो रही कमी को देखते हुए, साथ ही इस दौरान हेल्थ तथा दूसरी मदों पर हुए ज्यादा खर्च को समझते हुए वित्तमंत्री आयकर में कुछ और छूट देंगी. लेकिन अपने चौथे बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ऐसी सारी उम्मीदों को तोड़ दिया. यही नहीं, सरकार ने क्रिप्टो करंसी के निवेश के जरिये होने वाली कमाई पर भी 30 फीसदी का टैक्स लगा दिया और घोषणा की है कि जल्द ही आरबीआई डिटिजल करंसी लांच करेगी, जो कि डिजिटल रुपया होगा. सरकार को उम्मीद है कि इससे इकोनॉमी को बहुत बढ़ावा मिलेगा और वित्त मंत्री ने अपने इस बजट में वर्चुअल डिजिटल एसिड से टैक्स सेशन में बदलाव किया है. अब ऐसी किसी भी प्रॉपर्टी के ट्रांसफर पर 30 फीसदी कर लेगा, किसी तरह की कोई छूट नहीं मिलेगी. हां, कारपोरेट टैक्स को जरूर 18 फीसदी से घटाकर 15 फीसदी कर दिया गया है. इस तरह देखें तो साल 2022-23 का आम बजट कम से कम उन उम्मीदों के लिए तो निराशा लेकर ही आया है, जिसमें करदाताओं ने कर मुक्त आय की सीमा को 2.5 लाख से बढ़ाकर कम से 3 लाख किये जाने तक की उम्मीद की थी.

▲ डॉ. अनिता राठौर

टेनिस के शहंशाह का अविश्वसनीय कारनामा

किसी परीकथा सी है राफेल नडाल की जीत

लगभग एक माह पहले 35 वर्षीय राफेल नडाल को यह यकीन नहीं था कि वह दोबारा टेनिस कोर्ट पर उतर भी पाएंगे. वह चोटिल थे, बैसाखियों पर थे और इस बात को लेकर अपने दोस्त व महान प्रतिद्वंद्वी रोजर फेडरर, जो स्वयं चोटिल हैं, से मजाक कर रहे थे. लेकिन अब वह फेडरर व नोवाक जोकोविच को पीछे छोड़ते हुए रिकॉर्ड 21 ग्रैंडस्लैम (पुरुष एकल वर्ग) खिताब जीतने वाले इतिहास के पहले टेनिस खिलाड़ी बन गए हैं.

2009 से 2022 तक का इंतजार

नडाल ने अपना पहला ऑस्ट्रेलियन ओपन टाइटल 2009 में जीता था यानी 2022 में अपना दूसरा ऑस्ट्रेलियन ओपन टाइटल जीतने में उन्हें 12 वर्ष का समय लगा, जबकि वह 6 बार ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल में पहुंचे हैं. इस जीत के साथ नडाल, 1968 में टेनिस के प्रोफेशनल होने के बाद से जोकोविच के बाद केवल दूसरे खिलाड़ी हैं जिन्होंने हर ग्रैंडस्लैम को कम से कम 2 बार जीता है. फेडरर को भी यह श्रेय प्राप्त नहीं है, क्योंकि उन्होंने फ्रेंच ओपन केवल एक बार जीता है. बहरहाल, ओपन एरा में नडाल चौथे ओल्डेस्ट मैन हैं, जो ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल में पहुंचे और 35 वर्ष या उससे अधिक आयु के पांचवें पुरुष हैं जो ओपन एरा में किसी भी ग्रैंडस्लैम के फाइनल में पहुंचा हो. तीस वर्ष का होने के बाद नडाल का यह 9वां ग्रैंडस्लैम फाइनल था और इस सिलसिले में केवल जोकोविच (10) ही उनसे आगे हैं. नडाल का यह 29वां करिअर ग्रैंडस्लैम फाइनल था, जिसमें उनका जीत-हार का रिकॉर्ड 21-8 है, जबकि दोनों फेडरर व जोकोविच ने 31 ग्रैंडस्लैम फाइनल खेले हैं और दोनों का ही जीत-हार रिकॉर्ड समान 20-11 है. बहरहाल, 5 घंटे 24 मिनट चले ऑस्ट्रेलियन ओपन फाइनल में नडाल ने अपने परीकथा जैसे करिअर का सबसे बड़ा रोमांचक, दिलचस्प व ऐतिहासिक कमबैक दर्ज किया. वह दो सेट से पिछड़ रहे थे और तीसरे सेट में भी ब्रेक से पिछड़ जाते अगर मेदवेदेव फोरहैंड लाइन से बाहर न जाते. लेकिन इसके बाद उन्होंने अपने करिअर के सबसे भावनात्मक मैच में बाजी पलट दी. फाइनल में दो सेट से पिछड़ने के बावजूद वह ऑस्ट्रेलियन ओपन जीतने वाले पहले खिलाड़ी बने.

लीजेंड ही कर सकते हैं अनहोनी को होनी

यह अविश्वसनीय कारनामा एक लीजेंड ही कर सकता था, इसलिए इस पर एक अन्य लीजेंड की टिप्पणी को दोहराना ही मुनासिब होगा. नडाल की जीत पर फेडरर ने कहा, "क्या गजब का मैच था! 21वां ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाले पहले पुरुष खिलाड़ी राफेल नडाल, जो मेरे दोस्त व महान प्रतिद्वंद्वी हैं, को दिली मुबारकबाद. कुछ माह पहले हम दोनों ही बैसाखियों पर थे और इसको लेकर मजाक कर रहे थे. गजब! एक महान चैंपियन को कभी कम नहीं आंकना चाहिए. तुम्हारी अविश्वसनीय कार्य नैतिकता, समर्पण और निरंतर संघर्ष करने की प्रवृत्ति मेरे और दुनिया में अनगिनत अन्यों के लिए प्रेरणा है. मुझे गर्व है कि मैं इस युग को तुम्हारे साथ शेयर कर रहा हूं और खुद को सम्मानित महसूस करता हूं कि तुम्हें अधिक हासिल करने के लिए प्रेरित करने में मेरी भी भूमिका है, जैसा कि पिछले 18 वर्षों के दौरान तुमने मेरे लिए किया है. मुझे यकीन है कि तुम्हारे आगे और भी उपलब्धियां हैं, लेकिन फिलहाल के लिए इसका आनंद लो." काफी समय से फेडरर, जोकोविच व नडाल 20-20 ग्रैंडस्लैम खिताबों पर रुके हुए थे. तीनों ही इससे आगे निकलना चाहते थे, लेकिन ऑस्ट्रेलियन ओपन में अवसर मिला केवल नडाल को, क्योंकि फेडरर चोट के कारण और जोकोविच कोविड वैक्सीन न लेने की जिद के चलते इस प्रतियोगिता का हिस्सा न बन सके. अगर तीनों एक ही प्रतियोगिता में 21वें खिताब की होड़ में होते तो शायद यह तय हो जाता कि इनमें सर्वकालिक महानतम टेनिस खिलाड़ी कौन है? बहरहाल, अब यह बात तब तय होगी जब इनमें से कोई मार्गरेट कोर्ट के 24 एकल ग्रैंडस्लैम खिताब के रिकॉर्ड को तोड़ेगा. वैसे तो अभी सेरेना विलियम्स (23) और स्टेफी ग्राफ (22) भी इनसे आगे हैं.

बार्टी ने भी लहराया परचम

ऑस्ट्रेलियन ओपन के महिला एकल वर्ग में ऐशलीग बार्टी ने डेनिल्ले कॉलिंस को 6-3, 7-6 से हराकर फाइनल जीता. बार्टी की यह विजय पांच महत्वपूर्ण कारणों से विशेष रही. एक, 1978 में क्रिस्टीन ओ'नील के बाद ऑस्ट्रेलियन ओपन जीतने वाली बार्टी पहली ऑस्ट्रेलियाई महिला हैं, यानी मेजबान देश को अपनी ही महिला चैंपियन पाने का जो 44 वर्ष लम्बा इंतजार था, उसे बार्टी ने समाप्त किया. दो, वर्जीनिया वेड, जेनिफर कैप्रिआती व नओमी ओसाका के बाद बार्टी ओपन एरा में चौथी महिला हैं जिनका ग्रैंडस्लैम फाइनल में जीत प्रतिशत 100 है (न्यूनतम 3 खिताब). तीन, 2017 में सेरेना विलियम्स के बाद बार्टी पहली खिलाड़ी हैं, जिन्होंने बिना कोई सेट ड्राप किये ऑस्ट्रेलियन ओपन जीता है. चार, ओपन एरा में बार्टी आठवीं डब्लूटीए खिलाड़ी हैं, जिन्होंने रोलां गैरा, विंबल्डन व ऑस्ट्रेलियन ओपन जीता है. पांच, हाना मंदिकोवा (ग्रास, ऑस्ट्रेलियन ओपन 1980 क्ले, रोलां गैरा 1981 हार्ड, यूएस ओपन 1985) व सेरेना विलियम्स (हार्ड, यूएस ओपन 1999 क्ले, फ्रेंच ओपन 2002 ग्रास, विंबलडन 2002) के बाद बार्टी (क्ले, फ्रेंच ओपन 2019 ग्रास, विंबल्डन 2021 हार्ड, ऑस्ट्रेलियन ओपन 2022) पहली महिला खिलाड़ी हैं जिन्होंने अपने पहले तीन एकल ग्रैंडस्लैम खिताब 3 अलग-अलग सर्फेस पर हासिल किये हैं. तीन अलग-अलग सतह पर चैंपियन बनना यह दर्शाता है कि बार्टी कम्पलीट प्लेयर हैं. इससे यह अंदाजा भी लगाया जा सकता है कि भविष्य में बार्टी और भी ग्रैंडस्लैम जीत सकती हैं.

▲ साशा

यूं तो पूरा विश्व ही उनका परिवार था लेकिन जिस फैमिली में जन्मीं और पली-बढ़ीं उसके बारे में जानेंगे। लता मंगेशकर तीन बहनों और एक भाई में सबसे बड़ी थीं। इनके कदमों पर चलकर ही लता की बहनों व भाई ने संगीत की दुनिया में अपना दायरा बढ़ाया। देश की स्वर कोकिला और भारत रत्न से सम्मानित सिंगर लता मंगेशकर का आज निधन हो गया। कोरोना संक्रमण के कारण 92 साल की लता मंगेशकर को मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती किया गया था। कई डॉक्टरों की देखरेख में इलाज चलता रहा। आज फिर उनकी तबियत बिगड़ी और उन्हें वेंटिलेटर पर शिफ्ट किया गया लेकिन उनकी जान नहीं बचाई जा सकी।

उनके निधन से बॉलीवुड, समूचे देश और विश्व में उनके करोड़ों प्रशंसकों में शोकाकुल हैं। यूं तो पूरा विश्व ही उनका परिवार था लेकिन जिस फैमिली में जन्मीं और पली-बढ़ीं उसके बारे में जानेंगे। लता मंगेशकर तीन बहनों और एक भाई में सबसे बड़ी थीं। इनके कदमों पर चलकर ही लता की बहनों व भाई ने संगीत की दुनिया में अपना दायरा बढ़ाया। देश की दिग्गज और मशहूर गायिका लता मंगेशकर अपने माता-पिता की सबसे बड़ी बेटी थीं। इनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर मशहूर संगीतकार थे। इनकी माता का नाम शीवंती मंगेशकर है। शीवंती हाउस वाइफ थीं उनको गाने का शौक नहीं था।

5 भाई-बहनों में सबसे बड़ी थीं लता मंगेशकर

मीना खडीकर

लता के बाद मीना का जन्म हुआ था। बड़ी बहन होने के नाते लता ने अपना फर्ज निभाया और मीना का ख्याल रखा। 90 साल की मीना खडीकर एक भारतीय मराठी और हिंदी भाषा की पार्श्व गायिका और संगीतकार हैं।

आशा भोंसले

88 वर्ष की मशहूर गायिका आशा भोंसले लता की बहन हैं। आशा की आवाज में भी कम जादू नहीं है। लोग आशा के गानों को भी दिल से सुनते हैं। आशा को भी बॉलीवुड की सफल गायिकाओं में गिना जाता है। आज भी इनकी आवाज का जादू गया नहीं है। लता और आशा की आवाज सुनकर शायद आप भी यही कहोगे कि सच में इनके परिवार को सरस्वती को वरदान प्राप्त है।

उषा मंगेशकर

86 वर्ष की उषा मंगेशकर भी लता मंगेशकर की बहन हैं। संगीत की दुनिया में इनका भी सिक्का खूब चला है। मराठी, हिंदी, बंगाली, कन्नड़, नेपाली, भोजपुरी, गुजराती और असमिया गानों की वजह से इनको पहचान मिली।

हृदयनाथ मंगेशकर

84 वर्ष के हृदयनाथ मंगेशकर लता, मीना, आशा और उषा के सबसे छोटे व लाडले भाई हैं। इन्होंने भी संगीत की दुनिया में कदम रखा और अपनी पहचान बनाई। संगीत निर्देशक के रूप में फिल्म जगत में हृदयनाथ मंगेशकर ने खुद का लोहा मनवाया।

जब लता मंगेशकर ने रिपोर्टर बन लिया था किशोर कुमार का इंटरव्यू

स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन से पूरे देश में दुख की लहर है। उनका जन्म 28 सितंबर 1929 को मध्य प्रदेश के इंदौर में हुआ था। लता मंगेशकर ने कई महान संगीतकारों के साथ काम किया और उनके पुराने गाने आज भी खूब पसंद किए जाते हैं। लता मंगेशकर ने किशोर कुमार के साथ भी कई सदाबहार गाने गाए। किशोर कुमार की कमी को हमेशा महसूस करने वालीं लता मंगेश्कर उन्हें एक बेहतरीन गायक ही नहीं एक अच्छे इंसान के रूप में हमेशा याद करती हैं। किशोर ने लता के साथ पहला गाना 'ये कौन आया रे' गाया था जो कि साल 1948 में बनीं फिल्म 'जिद्दी' का था। दोनों में हमेशा ही अच्छी जमती थी और एक दूसरे के साथ काफी गाने गाए। लता ने रिपोर्टर बन किशोर कुमार का एक इंटव्यू भी लिया था जिसका दुर्लभ वीडियो यहाँ दिया जा रहा है।

इस वीडियो में लता किसी रिपोर्टर की तरह ही सवाल कर रही हैं। उन्होंने कई सवाल कई। उनसे पूछा कि गाने में, एक्टिंग में, म्यूजिक डायरेक्शन में सबसे अच्छा क्या लगता है। तो किशोर कहते हैं कि उन्हें वे स्व. कुंदनलाल जी को गुरु मानते हैं और संगीत को पहला स्थान देते हैं। इतने साल से गा रहे हैं तो किन म्यूजिक डायरेक्टर के साथ गाना अच्छा लगा। किशोर ने इस इंटरव्यू ने बताया था कि किस तरह लता से पहली मुलाकात हुई थी। उन्होंने ट्रेन में एक दूसरे से पहली बार मिलने की बात बताई। वे इस दौरान कई किस्से बताते हैं। वहीं लता ने पूछा कि खुद के गाए हुए पसंदीदा गाने पूछें। उन्होंने बताया कि वे चैरिटी के लिए गाना गाना चाहते थे। उनसे जब पूछा कि आप अभी जो हैं उससे खुश हैं तो वे कहते हैं कि मैं बहुत खुश हूं लेकिन मेरा घर मुझे बुला रहा है और मैं वहां जाना चाहता हूं। बता दें कि किशोर दा ने अभी तक अपने फिल्मी करियर में 1500 गाने गाएं है।

लता ताई को दिया गया था धीमा ज़हर

तीन महीने तक बिस्तर पर रहीं, ज़हर देने वाले का पता भी चला मगर चुप रहीं

स्वर कोकिला लता मंगेशकर के बारे में कहा जाता है कि जब वे 33 साल की थीं, तब किसी ने उन्हें जहर देकर मारने की कोशिश की थी। एक बार खुद लता मंगेशकर ने इस कहानी के पीछे से पर्दा हटाया था। उन्होंने एक बातचीत में कहा था, 'हम मंगेशकर्स इस बारे में बात नहीं करते, क्योंकि यह हमारी जिंदगी का सबसे भयानक दौर था। साल था 1963। मुझे इतनी कमजोरी महसूस होने लगी कि मैं बेड से भी बमुश्किल उठ पाती थीं। हालात ये हो गए कि मैं अपने दम पर चल फिर भी नहीं सकती थी।'

तीन महीने तक बेड पर रही थीं लता जी: लता जी की मानें तो इलाज के बाद वे धीरे-धीरे ठीक हुईं। वे कहती हैं, 'इस बात की पुष्टि हो चुकी थी कि मुझे धीमा जहर दिया गया था। डॉक्टर्स का ट्रीटमेंट और मेरा दृढ़ संकल्प मुझे वापस ले आया। तीन महीने तक बेड पर रहने के बाद मैं फिर से रिकॉर्ड करने लायक हो गई थी।'

हेमंत कुमार रिकॉर्डिंग पर लाए थे: ठीक होने के बाद लता जी का पहला गाना 'कहीं दीप जले कहीं दिल' हेमंत कुमार ने कंपोज किया था। लता जी बताती हैं, 'हेमंत दा घर आए और मेरी मां की इजाजत लेकर मुझे रिकॉर्डिंग के लिए ले गए। उन्होंने मां से वादा किया कि किसी भी तरह के तनाव के लक्षण दिखने के बाद वे तुरंत मुझे घर वापस ले आएंगे। किस्मत से रिकॉर्डिंग अच्छे से हो गई। मैंने अपनी आवाज नहीं खोई थी।' लता जी के इस गाने ने फिल्मफेयर अवॉर्ड जीता था।

रिकवरी में मजरूह साहब का अहम रोल: लता मंगेशकर के मुताबिक उनकी रिकवरी में मजरूह सुल्तानपुरी की अहम भूमिका थी। वे बताती हैं, 'मजरूह साहब हर शाम घर आते और मेरे बगल में बैठकर कविताएं सुनाकर मेरा दिल बहलाया करते थे। वे दिन-रात व्यस्त रहते थे और उन्हें मुश्किल से सोने के लिए कुछ वक्त मिलता था, लेकिन मेरी बीमारी के दौरान वे हर दिन आते थे। यहां तक कि मेरे लिए डिनर में बना सिंपल खाना खाते थे और मुझे कंपनी देते थे। अगर मजरूह साहब न होते तो मैं उस मुश्किल वक्त से उबरने में सक्षम न हो पाती।'

जहर देने वाले का पता चल गया था: जब लता जी से पूछा गया कि कभी इस बात का पता चला कि उन्हें जहर किसने दिया था? तो उन्होंने जवाब में कहा, 'जी हां, मुझे पता चल गया था, लेकिन हमने कोई एक्शन नहीं लिया क्योंकि हमारे पास उस इंसान के खिलाफ कोई सबूत नहीं था।'

डॉक्टर्स ने कभी गाने पर संदेह नहीं जताया: बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के मुताबिक, जब लता जी से पूछा गया क्या यह सच है कि डॉक्टर्स ने उन्हें कह दिया था कि वे फिर कभी नहीं गा पाएंगी? तो जवाब में उन्होंने कहा, 'यह सही नहीं है। यह मेरे धीमे जहर के इर्द-गिर्द बुनी गई एक काल्पनिक कहानी है। डॉक्टर ने मुझे नहीं कहा था कि मैं कभी नहीं गा पाऊंगी। मुझे ठीक करने वाले हमारे फैमिली डॉक्टर आर. पी. कपूर ने तो मुझसे यह तक कहा था कि वे मुझे खड़ी करके रहेंगे, लेकिन मैं साफ कर देना चाहती हूं कि पिछले कुछ सालों में यह गलतफहमी हुई है। मैंने अपनी आवाज खोई नहीं थी।'

लता जी का घर है, यह सोचकर मुँहमाँगी कीमत पर खरीदा था, फिर इसे सुरों के मंदिर की तरह पूजने लगे

स्वर कोकिला लता मंगेशकर का रविवार सुबह निधन हो गया। उनका जन्म इंदौर में हुआ था, इसलिए इंदौर में भी उनके स्वास्थ्य की कामना की जा रही थी। अब शहरवासी उन्हें श्रद्धांजलि देने के साथ उनके बचपन की यादों को ताजा कर रहे हैं।

28 सितंबर 1929 को लता मंगेशकर का जन्म इंदौर के सिख मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम दीनानाथ और मां का नाम शेवंती था। इंदौर जिला अदालत से लगी गली में लता जी की नानी का घर था, यहीं से उनकी संगीत शिक्षा शुरू हुई थी। इसके बाद वे सात साल की उम्र में महाराष्ट्र चली गईं। लता मंगेशकर के इंदौर से जाने के कुछ समय बाद उनके घर को एक मुस्लिम परिवार ने खरीदा था। यह घर अभी मेहता परिवार के पास है। यहां रहने वाले नितिन मेहता और स्नेहल मेहता बताते हैं, 'हमें जब पता चला कि इसी घर में लता जी का जन्म

हुआ था तो हमने इसे मुंहमांगी कीमत पर खरीद लिया। इसके बाद हमने घर का कायाकल्प करवाया। हमने दुकान के एक हिस्से में लताजी का म्यूरल बनवाया है। लता के छोटे भाई हृदयनाथ मंगेशकर भी यहां आ चुके हैं।' मेहता परिवार अब इस घर को सुरों के मंदिर की तरह पूजा करते हैं। लता जी का इंदौर वाला घर चार बार बिका। वर्तमान में मेहता परिवार ने घर के बाहरी हिस्से में कपड़े का शोरूम खोल लिया है।

आवाज को सुरीला बनाने खाती थीं मिर्च: गायकी में करियर शुरू करते वक्त किसी ने लता जी से कह दिया था कि मिर्च खाने से आवाज ज्यादा सुरीली होती है, इसलिए अपनी आवाज को और सुरीली और मीठी बनाने के लिए वे रोज ढेर सारी हरी मिर्च खाती थीं। खासकर तीखी कोल्हापुरी मिर्च। लता जी अपनी आवाज की फिटनेस के लिए बबल गम भी चबाती थीं। लता को जलेबी कुछ ज्यादा ही पसंद थी। इतना ही नहीं, उन्हें इंदौर के सराफा की खाऊ गली के गुलाब जाबुन, रबड़ी और दही बड़े बहुत पसंद थे। चाट गली और सराफा में उनका आना-जाना लगा रहता था।

सुमित्रा महाजन ने कहा था- लता जी आपकी बोली में ही छाई है गाने जैसी मधुरता: लता मंगेशकर के इंदौर से लाखों प्रशंसक हैं। इनमें पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन भी हैं। 2019 में लोकसभा स्पीकर रहते हुए महाजन ने लता जी के जन्मदिन पर उनके मुंबई स्थित निवास पर जाकर बधाई दी थी। दोनों के बीच उस दौरान आधा घंटा बातचीत हुई थी। तब लता जी ने महाजन से कहा था कि आप लोकसभा का संचालन बेहद प्रभावी तरीके से करती हैं। चर्चा के दौरान ताई (सुमित्रा महाजन) ने लता जी से कहा था, आपसे बात करते हुए ऐसा लग रहा है जैसे मैं कोई गाना सुन रही हूं। आपकी बोली में गाने जैसी मधुरता है। इसी दौरान हृदयनाथ मंगेशकर के साथ इंदौर की भी चर्चा हुई थी। लता जी ने खासतौर पर इंदौर के खान-पान और सराफा का जिक्र किया था। महाजन ने मुंबई में ही लता जी की बहन मीना खड़ीकर की लिखी पुस्तक 'मोठी तिची सावली' का विमोचन भी किया था।

25 रुपए थी पहली फीस

370 करोड़ रुपए की सम्पत्ति की मालकिन बनीं लता मंगेशकर

इंदौर मध्यप्रदेश के मिडिल क्लास परिवार में जन्मीं लता मंगेशकर आज भारत की सबसे अमीर सिंगर्स में से एक हैं। कई लोग उनकी तुलना माता सरस्वती से भी करते हैं। लता ने पिता के गुजरने के बाद घर की आर्थिक तंगी दूर करने के लिए सिंगिंग करियर शुरू किया था। पहली बार लता ने साल 1942 में मराठी फिल्म किती हसाल में गाना गाया था। इस गाने के लिए उस जमाने में 13 साल की लता को 25 रुपए फीस मिली थी। ये वहीं लता हैं जो आज 50 मिलियन यानी 370 करोड़ रुपए की संपत्ति की मालकिन हैं।

मुंबई में है लता का आलीशान घर

लता मंगेशकर साउथ मुंबई के पेडर रोड में स्थित प्रभु-कुंज भवन में रहती हैं। लता जी इस बिल्डिंग की पहली मंजिल में रहती हैं। उनके साथ बहन उषा मंगेशकर और भाई हृदयनाथ मंगेशकर का परिवार भी रहता है।

हर महीने करती हैं 40 लाख की कमाई

सीएनॉलेज नाम की वेब साइट के मुताबिक लता हर महीने 40 लाख और सालाना 6 करोड़ रुपए कमाई करती हैं। उनकी कमाई का मुख्य जरिए उनके गाने, इनसे मिलने वाली रॉयल्टी है। इसके अलावा उन्होंने म्यूजिक कॉन्सर्ट और म्यूजिक एलबम से भी कमाई की है।

प्रोडक्शन से भी कर चुकी हैं कमाई

लता मंगेशकर अपने करियर में लता वादल, झांझर, कंचन गंगा और लेकिन जैसी फिल्में प्रोड्यूस की हैं। इंडस्ट्री के ज्यादातर सेलेब्स एड से करोड़ों कमाई करते हैं, हालांकि लता मंगेशकर महज 1991 में ग्लाइकोडिन कफ सिरप के एड में दिखी हैं।

पिता के नाम पर बनवाया अस्पताल

1989 में लता मंगेशकर फाउंडेशन की नीव रखी थी। इस फाउंडेशन के जरिए लता जी ने पुणे में अपने पिता दीनानाथ मंगेशकर के नाम पर अस्पताल बनवाया था जो 6 एकड़ में फैला हुआ है।

नागपुर में हैं लता मंगेशकर अस्पताल

दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल के अलावा लता मंगेशकर के नाम पर भी नागपुर, महाराष्ट्र में एक अस्पताल है। इसकी स्थापना 1991 में की गई थी।

दानवीर लता मंगेशकर: लता मंगेशकर हमेशा से ही डोनेशन में आगे रही हैं। उन्होंने कोरोना काल में सीएम रिलीफ फंड में 25 लाख रुपए दिए थे। इससे पहले सिंगर पुलवामा हमले में शहीद हुए जवानों को 1 करोड़ रुपए दान किए थे। महाराष्ट्र बाढ़ रिलीफ फंड में भी लता ने 11 लाख रुपए दान किए थे।

डूंगरपुर के राजा को दिल दे बैठी थीं लता मंगेशकर

स्वर कोकिला लता मंगेशकर की आवाज की दुनिया दीवानी है, लेकिन उनके निजी जीवन के बारे में कम ही लोग जानते हैं। उन्होंने ताउम्र शादी नहीं की, लेकिन प्यार से वे भी दूर नहीं रह पाईं। प्यार भी ऐसा कि, पूरी ज़िंदगी उसी के नाम कर दी। उन्हें राजस्थान के पूर्व डूंगरपुर राजघराने के राज सिंह से प्यार हुआ था। राज उन्हें प्यार से मिट्ठू बुलाते थे।

पहली मुलाक़ात में ही दिल दे बैठे थे

राज 1959 में लॉ करने मुंबई गए थे। क्रिकेट खेलने के भी शौकीन थे। 1955 से ही राजस्थान रणजी टीम के सदस्य थे। मुंबई के क्रिकेट मैदान में लता के भाई हृदयनाथ मंगेशकर से मुलाकात हुई। उनके भाई अक्सर राज को अपने साथ घर लेकर जाते थे। राज सिंह पहली मुलाकात में ही लता को दिल दे बैठे थे। धीरे-धीरे बात शुरू हुई। लता रिकॉर्डिंग में बिजी रहती थीं। बिजी शेड्यूल के कारण ज्यादा मिल नहीं पाती थीं। कहते हैं, राज उनके गाने सुनकर उनकी कमी को पूरा करते थे। फुरसत मिलते ही दोनों

दोनों क्रिकेट के शौकीन थे: लता मंगेशकर और राज सिंह डूंगरपुर की दोस्ती कब प्यार में बदल गई, इसका अंदाजा तो उन दोनों को भी नहीं था। राज लता के गानों के दीवाने थे। वे एक टेप रिकॉर्डर हमेशा अपनी जेब में रखते थे और उनके गाने सुनते थे। लता की क्रिकेट के प्रति दीवानगी भी छिपी नहीं है। अक्सर वे मैदान पर राज को क्रिकेट खेलते देखने जाती थीं। दोनों अक्सर मिला करते थे।

शादी करना चाहते थे दोनों: कहते हैं, राज और लता को एक-दूसरे का साथ बहुत पसंद था। मोहब्बत परवान पर थी। दोनों शादी करना चाहते थे। राज ने एक बार अपने माता-पिता से कहा था, कोई आम लड़की आपके राजघराने की बहू नहीं होगी। लता में गुण खूब थे, लेकिन एक साधारण परिवार से थीं। राज परिवार के आगे झुक गए। शादी न होने के बाद भी दोनों ने एक-दूसरे का साथ दिया था। कई चैरिटी में साथ काम किया था। हालांकि, दोनों की मोहब्बत केवल याद बनकर रह गई है।

पायलट बनोगे तो दुनिया घूमोगे

कई हैं विकल्प

पायलट की जॉब, एक ऐसी जॉब है जिसमें अच्छी सैलरी के साथ- साथ कई अन्य सुख-सुविधाएं भी मिलती हैं. यह जॉब रोमांच से भरपूर तो है ही, इसके साथ ही इस जॉब में आपको पूरी दुनिया घूमने का मौका भी मिलता है. अगर आप पायलट बनकर अपना करिअर बनाना चाहते हैं, तो आपको इसके बारे में जानकारी होना जरूरी है.

एजुकेशन

अगर आप पायलट बनना चाहते हैं तो सबसे पहले आपको 10वीं क्लास अच्छे अंकों से पास करनी होगी. उसके बाद आपको फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्स के साथ 12वीं क्लास को पास करने के साथ आपको इंग्लिश अच्छे से बोलनी आनी चाहिए. अगर आपने इन शर्तों को पूरा कर लिया तो आप 12वीं कक्षा पास करने के साथ ही पायलट प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए आर्म्ड फोर्सेज सेंट्रल मेडिकल इस्टैब्लिशमेंट से मेडिकल सर्टिफिकेट होना जरूरी है. पायलट बनने के लिए आपको पायलट एंट्रेंस एग्जाम को क्लियर करना होता है जिसमें लिखित परीक्षा, मेडिकल परीक्षा और इंटरव्यू शामिल है.

कितना समय लगता है

पायलट बनने के लिए सबसे पहले किसी फ्लाइंग क्लब में एडमिशन लेना होगा, जो गवर्नमेंट ऑफ इंडिया द्वारा मान्यताप्राप्त होना चाहिए. इसके साथ ही आपको स्टूडेंट पायलट लाइसेंस के लिए अप्लाई करना होता है और एंट्रेंस एग्जाम पास करना होगा. उसके बाद आपको ट्रेनिंग पूरी करनी होगी. इंडिया में आपको पायलट बनने के लिए 2 से 3 साल का समय लगता है. वहीं अगर आप विदेश जाकर पायलट बनना चाहते हैं 1 साल में पायलट बन सकते हैं.

योग्यता

पायलट बनने के लिए आपको एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया को पूरा करना जरूरी होता है, जिसमें भारतीय नागरिक होने के अलावा 12वीं क्लास फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ के साथ न्यूनतम 50 फीसदी अंकों से पास करना जरूरी है. इसके अलावा आपकी लंबाई कम से कम 5 फीट होनी चाहिए. वहीं आपकी उम्र कम से कम 16 वर्ष और अधिकतम 32 वर्ष होनी चाहिए. आपको किसी भी तरह की कोई गंभीर बीमारी नहीं होनी चाहिए. आपकी आंखों का विजन सही होना चाहिए.

यहां पर बना सकते हैं करिअर

एयरलाइन

पायलट करिअर में एयरफोर्स में शामिल होने के अलावा भी कई विकल्प हैं. जिसमें एयरलाइन पायलट बनना मुख्य है. इनका काम दुनिया भर में अधिक दूरी पर यात्रियों और कार्गो को एक निश्चित समय पर ले जाने के लिए एयरलाइन को उड़ाना होता है. एक वाणिज्यिक पायलट यात्रियों और कार्गो को कम दूरी पर ले जाने के लिए क्षेत्रीय एयरलाइन को उड़ाने में शामिल होता है. युवा उम्मीदवार इस करिअर को पसंद करते हैं क्योंकि इसमें आप पूरी दुनिया घूम सकते हैं.

कॉर्पोरेट

अगर आप एक कॉर्पोरेट पायलट बनना चाहते हैं तो यह निजी उद्यमों या व्यक्तियों के लिए छोटे कॉर्पोरेट टर्बोप्रॉप और जेट उड़ाने का काम करता है, ताकि कॉर्पोरेट अधिकारियों की बैठकों में यात्रा में सहायता की जा सके.

चार्टर

अगर आप किसी विशिष्ट गंतव्य और यात्रियों के लिए प्लेन उड़ाना चाहते हैं तो आप चार्टर पायलट बन सकते हैं, जिसे एयर टैक्सी भी कहा जाता है. आप अपनी निजी चार्टर कंपनी संचालित कर सकते हैं या अन्य चार्टर एयरलाइनों के लिए काम कर सकते हैं.

संस्थान

- सीएई ऑक्सफोर्ड एविएशन अकादमी
- इंडिगो कैडेट प्रशिक्षण कार्यक्रम
- सरकारी विमानन प्रशिक्षण संस्थान
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी
- बॉम्बे फ्लाइंग क्लब
- राजीव गांधी एकेडमी ऑफ एविएशन टेक्नोलॉजी
- मध्य प्रदेश फ्लाइंग क्लब
- राष्ट्रीय उड़ान प्रशिक्षण संस्थान
- अहमदाबाद एविएशन एंड एरोनॉटिक्स लिमिटेड
- पुडुचेरी ठाकुर कॉलेज ऑफ एविएशन
- गवर्नमेंट फ्लाइंग क्लब
- ओरिएंट फ्लाइंग स्कूल
- उड्डयन और विमानन सुरक्षा संस्थान

टेक्सटाइल इंजीनियरिंग

किसी भी देश व सभ्यता के विकास में टेक्सटाइल इंडस्ट्री का बहुत बड़ा योगदान होता है. भारत में भी इस इंडस्ट्री ने देश की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है. इसे देश के सबसे पुराने इंडस्ट्री में से एक माना जाता है. भारत में पहले सिर्फ फैब्रिक प्रोडक्शन किया जाता था, लेकिन अब नई टेक्नोलॉजी के आने से यह तेजी से विकसित हुई है. अब यह इंडस्ट्री रिसर्च, डेवलपमेंट, मेन्युफैक्चरिंग और मर्चेंडाइजिंग जैसी कई श्रेणियों में काम कर रही है, जिसके कारण इसमें जॉब के अवसर भी पहले की अपेक्षा अब तेजी से बढ़ रहे हैं.

कपड़ों को फैशनेबल बनाओ भविष्य चमकाओ

टेक्सटाइल सेक्टर में रंग, वस्त्र फाइबर, मशीनरी और उत्पाद, कपड़ा और परिधान प्रक्रियाओं को डिजाइन और नियंत्रित करने की प्रक्रिया शामिल है. जिसमें फैशनेबल कपड़ों की मांग को ध्यान में रखते हुए बहुत ज्यादा रिसर्च, क्रिएटिविटी और इनोवेशन की जरूरत होती है. इसमें टेक्सटाइल इंजीनियरिंग की यह शाखा उन सिद्धांतों का भी अध्ययन करती है जो कपड़ा फाइबर के निर्माण में पॉलिमर का विश्लेषण करते हैं. जिनका उपयोग सभी प्रकार के यार्न और टेक्सटाइल कपड़ों के निर्माण में किया जाता है. कपड़ा इंजीनियरिंग में कपड़े को आकर्षक और फैशनेबल बनाने पर जोर दिया जाता है. इसके लिए टेक्सटाइल इंजीनियर को काफी रिसर्च और एक्सपेरिमेंट करना पड़ता है. टेक्सटाइल इंजीनियर को नवाचार, अनुसंधान और रचनात्मकता जैसे कौशल की आवश्यकता होती है.

कोर्सेस

अगर आप टेक्सटाइल इंडस्ट्री में करिअर बनाना चाहते हैं तो आपको 12वीं में फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथ्स या बायोलॉजी जैसे विषय में पढ़ाई करनी होगी. इसके बाद टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी में बीई या बीटेक, टेक्सटाइल डिजाइनिंग में बीए, बीएससी, बैचलर ऑफ डिजाइन, डिप्लोमा इन टेक्सटाइल मैन्युफैक्चर या टेक्सटाइल केमिस्ट्री में बीटेक कर सकते हैं. वहीं आप इन कोर्सेज में एडवांस्ड डिप्लोमा, एमई, एमटेक और उसके बाद पीएचडी भी कर सकते हैं.

जॉब प्रोफाइल

टेक्सटाइल इंडस्ट्री में आप कई जॉब प्रोफाइल पर रहकर कार्य कर सकते हैं. जिसमें मुख्य रूप से प्रोडक्शन कंट्रोल, प्रोडक्ट रिसर्च एंड डेवलपमेंट, इंजीनियरिंग प्रोसेस, सेल्स, कॉर्पोरेट मैनेजमेंट, सुपरविजन आदि डिपार्टमेंट्स में काम कर सकते हैं. एक टेक्सटाइल इंजीनियर आम तौर पर इंजीनियरिंग प्रोसेस से जुड़ा होता है, जबकि अपैरल और गारमेंट्स की डिजाइनिंग और मेन्युफैक्चरिंग के लिए काम करने वाले प्रोफेशनल्स प्रोडक्ट रिसर्च एंड डेवलपमेंट डिपार्टमेंट में काम करते हैं.

इन स्किल्स की जरूरत

अगर आप इस फील्ड में जाना चाहते हैं तो आपके अंदर कई स्किल का होना जरूरी है, जिसमें मुख्य रूप से कम्युनिकेशन स्किल्स, कंप्यूटर स्किल्स, एनालिटिकल स्किल्स और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स होनी जरूरी हैं. इसके अलावा उनमें चीजों की बारीकियों पर ध्यान देने की क्षमता, लॉजिकल थिंकिंग और क्रिएटिविटी होनी भी जरूरी है.

संभावनाएं

कोर्स पूरा होने के बाद आप टेक्सटाइल मिल्स, एक्सपोर्ट हाउसेज, निटवेयर मेन्युफैक्चरिंग यूनिट्स, टेक्सटाइल डाइंग एंड प्रिंटिंग यूनिट्स में काम कर सकते हैं. इसके अलावा आप सरकार द्वारा प्रायोजित अथवा निजी सिल्क, हैंडलूम, जूट, खादी, क्राफ्ट डेवलपमेंट संस्थानों में काम कर सकते हैं. आप फैशन रीटेलर्स डिजाइन स्टूडियोज और बड़ी टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज में भी काम कर सकते हैं.

संस्थान

- आईआईटी दिल्ली
- गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी, सेरामपुर
- इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइन, कल्याण
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली
- उत्तरप्रदेश टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट, कानपुर
- डॉ बीआर अंबेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जालंधर
- एलडी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, अहमदाबाद
- गवर्नमेंट पॉलीटेक्निक, नागपुर

सक्सेस स्टोरी

चौथे प्रयास में बनीं IAS टॉपर

लड़कियों को आगे बढ़ने में कर रहीं मदद

अगर आप मन में कुछ ठान लें तो मुश्किल कुछ भी नहीं है. आपके सामने चुनौतियां आएंगी, आप असफल भी होंगे, लेकिन कोशिशें एक दिन सफलता जरूर दिलाएंगी. ये कहना है 2017 बैच की 120वीं रैंक हासिल कर IAS बनने वाली किरण भड़ाना का. किरण राजस्थान के भरतपुर से हैं. उनकी शुरुआती शिक्षा राजस्थान से ही हुई. किरण राजस्थान के गुर्जर समुदाय से हैं. चूंकि इस समाज में बेटियों को ज्यादा पढ़ने नहीं दिया जाता है, इसलिए उन्हें भी रोकने की कोशिश की गई. लेकिन उनके पिता ने आगे बढ़ने में हमेशा उनका साथ दिया.

ग्रेजुएशन के साथ शुरू की तैयारी

किरण ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के श्रीराम कॉलेज से अपनी ग्रेजुएशन की पढ़ाई की. इसके बाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एमए किया. ग्रेजुएशन के साथ ही सिविल सर्विसेज की तैयारी शुरू कर दी. हालांकि पढ़ाई और तैयारी, दोनों एक साथ करने में उन्हें कुछ दिक्कतें जरूर आईं. उन्होंने टाइम मैनेजमेंट से इसका हल निकाला. किरण ने ग्रेजुएशन के बाद वर्ष 2012 में पहली बार प्रयास किया, लेकिन सफल नहीं हो सकीं. इसके बाद 2014 में दूसरा और 2015 में तीसरा प्रयास भी असफल रहा. लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और कोशिश करती रहीं. वर्ष 2016 में उन्होंने चौथा प्रयास किया और इस बार वे सफल रहीं. वे 2017 में 120वीं रैंक के साथ IAS बनीं. फिलहाल वे हिमाचल प्रदेश के सलूनी में SDM पद पर तैनात हैं.

सिविल की तैयारी के लिए खुलवाईं 7 लाइब्रेरी

किरण गुर्जर समुदाय से हैं इसलिए जानती हैं कि लड़कियों को आगे बढ़ने में किस तरह की दिक्कतें आती हैं. इसलिए अब वे न सिर्फ गुर्जर समाज, बल्कि सभी लड़कियों को आगे बढ़ने में मदद कर रही हैं. वे लड़कियों की कॉउंसलिंग करती हैं और उन्हें IAS की तैयारी भी करवाती हैं. उन्होंने सलूनी में युवाओं के लिए 7 लाइब्रेरी भी खुलवाई हैं ताकि बच्चे सही ढंग से सिविल की तैयारी कर सकें.

संस्कृत में पढ़ाई कर बनाएं करिअर

संस्कृत न सिर्फ भारत, बल्कि दुनिया की सबसे पुरानी भाषा में से एक है. इसलिए इसे देवभाषा भी कहा जाता है. संस्कृत भाषा से कई भाषाएं जैसे हिंदी, पंजाबी, बांग्ला, मराठी आदि की उत्पत्ति हुई है. स्टूडेंट्स अब इस भाषा को करिअर के तौर पर भी अपनाने लगे हैं. सबसे खास बात यह है कि इस भाषा की जानकारी होने के बाद स्टूडेंट्स को जॉब के लिए कहीं भटकना नहीं पड़ता है. संस्कृत का ज्ञान पूजा-पाठ, कुंडली मिलान, सोलह संस्कारों का संपादन स्वरोजगार के बेहतरीन अवसर देता है.

संस्कृत में करिअर बनाने के लिए यूजीसी नेट एग्जाम पास करके संस्कृत में रिसर्च किया जा सकता है. रिसर्च फैलोशिप एग्जाम पास करने के बाद स्टूडेंट्स को आर्थिक मदद भी मिलती है. इसके अलावा संस्कृत में साहित्य से संबंधित शॉर्ट टर्म कोर्सेज भी उपलब्ध हैं. इस भाषा में पांडुलिपि संरक्षण में भी अच्छे अवसर हैं, जिनके तहत इन्हें संरक्षित कर इंटरनेट पर अपलोड करना होता है. वहीं इस भाषा के जानकार कर्मकांड के साथ-साथ संस्कृत के ट्रांसलेटर, राइटर और टीचर के तौर पर भी काम कर सकते हैं. सरकारी नौकरियों जैसे सेना में भी शास्त्री और आचार्यों की भर्ती की जाती है.

कोर्स और शैक्षणिक योग्यता

संस्कृत की शिक्षा पारंपरिक और आधुनिक, दोनों तरह से दी जाती है. संस्कृत में ग्रेजुएशन करने के लिए आपको किसी भी मान्यताप्राप्त कॉलेज से 12वीं क्लास संस्कृत सब्जेक्ट के साथ कम से कम 50 प्रतिशत अंकों से पास होना जरूरी है. इसके बाद आप संस्कृत भाषा में स्पेशलाइजेशन के साथ बैचलर ऑफ आर्ट या अन्य डिप्लोमा कोर्सेस में एडमिशन ले सकते हैं. संस्कृत भाषा को ऑनर्स कोर्स के तौर पर लेकर स्टूडेंट्स 3 साल की अवधि में अपनी ग्रेजुएशन डिग्री कंप्लीट कर सकते हैं. वहीं स्टूडेंट्स इस भाषा में 1 वर्षीय डिप्लोमा कोर्स भी कर सकते हैं. इसके अलावा स्टूडेंट्स मास्टर ऑफ आर्ट्स इन संस्कृत भी कर सकते हैं. यह 2 साल का कोर्स होगा. जबकि संस्कृत में डॉक्टरेट की डिग्री लेने के लिए रिसर्चर के तौर पर रिसर्च करना होगा, जिसके लिए उन्हें पीएचडी करनी होगी.

विदेशों तक है पहुंच

जो भी लोग संस्कृत को कमतर आंक रहे हैं, उन्हें यह बात समझ लेनी चाहिए कि यह भाषा पूरे देश में भाषायी तौर पर 15 यूनिवर्सिटी में पढ़ाई जाती है. भारत की यूनिवर्सिटीज में लाखों स्टूडेंट्स संस्कृत पढ़ते हैं और इस पर रिसर्च भी करते हैं. इसका खास कारण यह है कि संस्कृत को दुनिया की सबसे पुरानी भाषा होने का गौरव प्राप्त है. भारत से बाहर संस्कृत पूरी दुनिया के 250 से भी ज्यादा यूनिवर्सिटीज में पढ़ाई जाती है.

कम एजुकेशन, अच्छी जॉब

देश के युवा अच्छी शिक्षा तो प्राप्त कर लेते हैं लेकिन मनचाही नौकरी और अच्छी सैलरी वाली जॉब मिलना इतना आसान नहीं होता. ऐसे में युवाओं की इस टेंशन को दूर करने के लिए हम आज यहां ऐसी नौकरियों के ऑप्शन दे रहे हैं जिनमें शानदार करिअर तो है ही, वहीं अच्छा पैसा भी है. खास बात ये है कि इन नौकरियों को पाने के लिए हायर एजुकेशन की भी जरूरत नहीं होती है.

इवेंट मैनेजर बनकर करें मोटी कमाई

इवेंट मैनेजमेंट एक ऐसी फील्ड है जिसकी डिमांड इन दिनों तेजी से बढ़ रही है. इस प्रोफेशन में आने के लिए आपको किसी डिग्री डिप्लोमा की कोई जरूरत नहीं है. बस आपके पास अच्छी स्किल्स होनी चाहिए और हर चीज को मैनेज करना आना चाहिए. अगर आप पार्टियों के शौकीन हैं तो यह प्रोफेशन आपके लिए और भी अच्छा रहेगा. इवेंट मैनेजर बनकर आप हर महीने 40 से 50 हजार रुपए तक कमा सकते हैं.

BPO में कर सकते हैं नौकरी

अगर आपकी इंग्लिश और हिंदी काफी अच्छी है यानी आप फ्लूएंट अंग्रेजी या हिंदी बोलते हैं तो आप BPO में अच्छी सैलरी पर नौकरी कर सकते हैं. BPO में काम करने के लिए ग्रेजुएट होना भी जरूरी नहीं है. आप 12वीं पास करने के बाद भी BPO में नौकरी कर सकते हैं. बीपीओ में 40 से 50 हजार तक की सैलरी पर नौकरी मिल जाती है.

फिटनेस ट्रेनर

आजकल की भागदौड़ भरी लाइफ में हर किसी के लिए फिट रहना बेहद जरूरी बन गया है. खुद की फिटनेस का खास ख्याल रखने वाले फिटनेस ट्रेनर की मदद लेते हैं. यही वजह है कि इन दिनों फिटनेस ट्रेनर की जबरदस्त डिमांड है. इस प्रोफेशन में आने के लिए आपके पास फिटनेस का ठीक-ठाक ज्ञान होना चाहिए. फिटनेस ट्रेनर बनने के लिए किसी भी प्रकार की हायर एजुकेशन की भी जरूरत नहीं होती है. इस प्रोफेशन के जरिए आप हर महीने 60 से 70 हजार रुपए या इससे भी ज्यादा कमा सकते हैं.

रेडियो या वीडियो जॉकी

रेडियो जॉकी और वीडियो जॉकी बनने के लिए आपके पास अच्छी स्किल होनी चाहिए. हालांकि इस प्रोफेशन में आने के लिए आपको किसी प्रकार की स्पेशल डिग्री तो नहीं चाहिए लेकिन इस फील्ड में करिअर बनाने के लिए ट्रेनिंग की जरूरत होती है. रेडियो जॉकी बनने के लिए आपकी आवाज अच्छी होनी चाहिए और भाषा पर भी पकड़ बेहद जरूरी है. इस प्रोफेशन में आप 35 से 40 हजार रुपए प्रतिमाह कमा सकते हैं.

सच्चा लीडर बनना है तो जरूर अपनाएं ये आदतें

अगर आप एक सच्चा लीडर बनना चाहते हैं और अपने बिजनेस को सफलता तक पहुंचाना चाहते हैं तो आपको खुद के व्यवहार में ये आदतें लानी जरूरी हैं.

बिजनेस हो या नौकरी या फिर स्टार्टअप, टीम का नेतृत्व तो सभी करना चाहते हैं, लेकिन टीम का विश्वास जीतना सबको नहीं आता. इसी विश्वास के बलबूते पर सफलता की इबारत लिखी जा सकती है. अक्सर हम दिग्गज एंटरप्रेन्योर्स का सक्सेस ग्राफ तो देख लेते हैं, लेकिन उसके पीछे उनकी मेहनत नहीं देखते. कभी नहीं सोचते कि वे इतनी बड़ी जिम्मेदारियां कैसे मैनेज करते हैं. कभी इनकी अच्छी आदतों को नहीं अपनाते और न उन पर गौर करते हैं. जानते हैं, कौनसी आदतें आपको सच्चा लीडर बना सकती हैं...

पढ़ना और सीखना जारी रखें

भले ही आप कितने ही सफल क्यों न हो जाएं, लेकिन खुद को सर्वोच्च ज्ञानी मानने की गलती न करें. पढ़ना और सीखना हमेशा जारी रखें. जानकारी इकट्ठी करने की आदत डालें, चाहे वह किताब से मिले, अखबार से, मोबाइल से, किसी और चीज से या फिर किसी व्यक्ति से. कई बार अपने साथ काम करने वालों से भी आपको नई चीजें सीखने को मिल सकती हैं, जो आपके बहुत काम आती हैं.

परिवार को भी वक्त देना जरूरी

बिजनेस में अक्सर ऐसी स्थितियां आती हैं, जब आपको तनाव होता है और किसी भी प्रकार का तनाव दूर करने का सबसे अच्छा साधन है परिवार. चाहे आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, अपने परिवार को वक्त जरूर दें. दिग्गज लीडर बनने के लिए अपने परिवार के साथ बिताए पल आपको खुशियां देंगे. जब आप खुश रहेंगे तो आप दूसरों को भी इसी खुशी का अहसास करा सकेंगे. साथ ही, यह खुशी आपको ऊर्जा से भर देगी.

स्पष्ट बात करें

आजकल तकनीक के दौर में वही बिजनेस को कामयाबी तक पहुंचा पाता है, जो टू-द-पॉइंट बात करता है. आज बेवजह लंबी बातचीत करने का किसी के पास वक्त नहीं है. ऐसे में जब भी आप किसी से बात करें या कोई मीटिंग संबोधित करें, तो पॉइंट-टू-पॉइंट ही अपनी बात रखें. बड़ी-बड़ी बातों को संक्षेप में समझाने की आदत डालें. बेकार की बातों में अपना और दूसरों का समय बर्बाद न करें. जब आप संक्षेप में अपनी बात कहेंगे तो न केवल आपका, बल्कि सामने वाले का समय भी बचेगा, जिसे किसी बेहतर काम में इस्तेमाल किया जा सकता है.

'स्नैकडाउन' मल्टी-राउंड प्रोग्रामिंग प्रतियोगिता

अनएकेडमी द्वारा 'स्नैकडाउन' मल्टी-राउंड प्रोग्रामिंग प्रतियोगिता का आयोजन गया है. सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्रों के अलावा कामकाजी पेशेवर भी इसमें हिस्सा ले सकते हैं. पहला ऑनलाइन क्वालीफाइंग राउंड 14 से 19 अक्टूबर तक होगा. ग्रैंड ऑनलाइन फिनाले 9 जनवरी 2022 को आयोजित किया गया है. स्नैकडाउन 2021 चैंपियन को 10,000 डॉलर्स और स्नैकडाउन गोल्ड ट्रॉफी से सम्मानित किया जाएगा. प्रथम उपविजेता और द्वितीय उपविजेता को ट्रॉफी और मर्चेंडाइज के साथ क्रमशः 7,500 डॉलर्स और 5,000 डॉलर्स के नकद पुरस्कार मिलेंगे. शीर्ष 10 भारतीय प्रोग्रामर्स और 4 से 25 तक के वैश्विक रैंक धारकों को नकद पुरस्कार दिए जाएंगे. प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए, प्रोग्रामर्स स्नैकडाउन 2021 वेबसाइट snackdown.codechef.com पर जाकर 19 अक्टूबर 2021 तक रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं.

इन सेक्टर्स में अपार संभावनाएँ

कोविड के चलते पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था मंदी के शिकंजे में आ गई. लंबे लॉकडाउन के चलते भारत की विकास दर भी निगेटिव हो गई थी, लेकिन अब उसमें लगातार सुधार हो रहा है. जहां कई सेक्टर्स मंदी के चपेट में हैं, वहीं कुछ ऐसे सेक्टर भी हैं, जिन्होंने इस आपदा में अवसर खोज लिया. हेल्थकेयर सेक्टर, ई-कामर्स सेक्टर और आईटी सेक्टर में काफी अच्छी ग्रोथ देखने को मिल रही है. इन तीनों ही सेक्टर में अवसर भी बढ़े हैं.

ई-कॉमर्स

कोविड और लॉकडाउन के चलते बाजार और दुकानें लंबे समय तक बंद रहीं. इसके चलते लोगों की निर्भरता ई-कॉमर्स कंपनियों पर काफी बढ़ गई. इस वजह से ऑनलाइन ग्रॉसरी और ई-रिटेल शॉप्स के लिए बड़े अवसर पैदा हुए हैं. लॉकडाउन में ई-कॉमर्स को छूट मिलने के बाद इन कंपनियों ने अपनी नेटवर्क चेन को ज्यादा मजबूत करने का काम किया. मैनपावर की कमी को इन्होंने अच्छे से हैंडल किया. हालांकि शुरुआत में कुछ दिक्कतें आईं, लेकिन बाद में ई-कॉमर्स कंपनियों ने इसकी रिकवरी कर ली. आज के समय में ई-कॉमर्स कंपनियों में वृद्धि ने लॉजिस्टिक्स और वेयरहाउसिंग में अधिक तकनीकी-सक्षम प्लेटफार्मों को भी मजबूत किया है. इस क्षेत्र में नौकरी करने वाले नए लोग अपने वेतन में 16 फीसदी वृद्धि की उम्मीद कर सकते हैं. इस क्षेत्र में ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सैकड़ों डिलीवरी स्टार्ट-अप और हाइपर लोकल स्टार्ट-अप भी अब मैदान में उतर गए हैं जिससे इस फील्ड की जॉब्स में एकाएक बढ़ोतरी हुई है.

आईटी

कोविड आने के बाद सबसे पहले और सबसे ज्यादा नेगेटिव असर आईटी सेक्टर पर पड़ा. खासकर लॉकडाउन के बाद एक बार को तो यह सेक्टर पूरी तरह बंद ही हो गया था, लेकिन इससे उबरते हुए इस सेक्टर ने ऐसा रास्ता निकाला जिससे आज ये सेक्टर सबसे ज्यादा फायदे में है. तमाम आईटी कंपनियों ने डिजिटल मॉडल बेहतर तरह से अपनाया जो उनकी सफलता का प्रमुख कारण बन गया. लगभग सभी आईटी कंपनियों ने वर्क फ्रॉम होम मॉडल को अच्छे से लागू किया. इसके चलते उनके बिजनेस में गिरावट नहीं आई. इससे एक तरफ तो उनके खर्चे कम हो गए तो दूसरी तरफ ऑनलाइन क्लाइंट बढ़ते रहे. लॉकडाउन में बंद पूरी दुनिया इन्फोटेक के भरोसे आ गई, जिसका इस सेक्टर को जबरदस्त फायदा मिला. साइबर सिक्योरिटी की डिमांड ने भी इसमें भूमिका निभाई. इस फील्ड में जॉब करने वाले प्रोफेशनल अपनी पिछली सैलरी के मुकाबले 15 से 25 फीसदी की बढ़त की उम्मीद कर सकते हैं. हेल्थ-टेक, एड-टेक और गेमिंग इंडस्ट्री की रिक्रूटमेंट में अचानक तेजी आई है. इसके चलते इस फील्ड में जॉब के अवसर भी काफी बढ़ गए हैं.

हेल्थकेयर

कोविड से जहां कई सेक्टर को बहुत नुकसान हुआ, वहीं हेल्थकेयर सेक्टर को सबसे ज्यादा फायदा हुआ. इस सेक्टर में लगातार अच्छी ग्रोथ हुई है. इसके चलते इस फील्ड में जॉब्स की भी भरमार है. एक अनुमान के मुताबिक 2021 में इस क्षेत्र में काम करने वाले नए लोग अपनी पिछली सैलरी के मुकाबले 15 से 20 प्रतिशत बढ़ोतरी की उम्मीद कर सकते हैं. फार्मा कंपनियों ने भी इस आपदा को अवसर में बदला है.

कोविड के चलते लोग अपनी हेल्थ को लेकर पहले से कहीं ज्यादा सजग हो गए हैं. जरा भी सर्दी, खांसी या वायरल होने पर लोगों ने डॉक्टर से कंसल्ट किया और दवाओं का सहारा लिया. दवाओं के साथ हेल्थ सप्लीमेंट, फेस मास्क, सैनिटाइजर, इम्यूनिटी बढ़ाने वाली दवाएं, हाइजीन से जुड़े प्रोडक्ट की जमकर डिमांड आई और ऑनलाइन दवाओं की सप्लाई में भी बढ़ोतरी हुई. लैब और टेस्टिंग की सुविधा में विकास होने के साथ बूस्ट भी किया है, जिससे निजी अस्पतालों को भी काफी फायदा हुआ है. इसके चलते आने वाले समय में इस फील्ड में जॉब्स की बेहतरीन संभावनाएं हैं.

एक नज़र

राजस्थान में शादी करने वाली दूसरे राज्य की महिला को नहीं मिलेगा नौकरी में आरक्षण

कार्यालय संवाददाता

जोधपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए कहा कि राजस्थान के व्यक्ति से विवाह करने के बाद माइग्रेट होने वाली महिला अन्य प्रदेश के एससी, एसटी व ओबीसी के आधार पर प्रदेश में सरकारी नौकरी में आरक्षण की हकदार नहीं है। लेकिन वह जाति प्रमाण पत्र के साथ ही इसके आधार पर देय अन्य सभी तरह की सुविधाओं को हासिल करने की हकदार है। हनुमानगढ़ के नोहर में रहने वाली एक महिला सुनीता रानी ने याचिका दायर कर बताया कि वह पंजाब की रहने वाली है। उसकी शादी राजस्थान के नोहर निवासी व्यक्ति के साथ हो गई। इसके बाद उसने एससी जाति प्रमाण पत्र के लिए नोहर तहसीलदार के पास आवेदन किया, लेकिन वह इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि वह राजस्थान की मूल निवासी नहीं है। न्यायाधीश दिनेश मेहता ने राजस्थान हाईकोर्ट के वर्ष 2018 व 2020 में इसी तरह के मामलों में दिए गए फैसलों का उदाहरण देते हुए कहा कि शादी करने के बाद कोई महिला राजस्थान में नौकरी में आरक्षण की हकदार नहीं हो सकती है। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसी महिलाएं जाति प्रमाण पत्र की हकदार है। ताकि इसके आधार पर नौकरी के अलावा राज्य सरकार की ओर से चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं में देय लाभ ले सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस तरह के मामलों में सुप्रीम कोर्ट पूर्व में ही स्पष्ट कर चुका है। ऐसे में इसे आरक्षण व्यवस्था में बदलाव से जोड़ कर नहीं देखा जाए। यह आदेश न ही किसी को आरक्षण से वंचित करने का है। कोर्ट का आदेश सिर्फ जाति प्रमाण पत्र तक सीमित है। न्यायाधीश मेहता ने हनुमानगढ़ के एसडीएम को इस महिला को जाति प्रमाण पत्र जारी करने का आदेश दिया। साथ ही कहा कि इस पर लिखा जाए कि यह सरकारी नौकरी के लिए मान्य नहीं होगा।

उषा शर्मा बनी मुख्य सचिव, तेरह साल बाद प्रदेश में फिर महिला मुख्य सचिव

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान की मुख्य सचिव वरिष्ठ आईएएस उषा शर्मा नियुक्त हो गई है। कार्मिक विभाग ने उनके मुख्य सचिव पद पर नियुक्ति संबंधी आदेश जारी किए गए। उषा शर्मा ने सोमवार को निरंजन आर्य से मुख्य सचिव पद का कार्य ग्रहण किया। निरंजन आर्य आज सेवानिवृत्त हुए हैं और सरकार ने उन्हें मुख्यमंत्री सलाहकार पद पर नियुक्त किया है। उषा शर्मा दूसरी महिला मुख्य सचिव है। पूर्व में तेरह साल पहले 2009 में अशोक गहलोत सरकार में ही खुशाल सिंह को मुख्य सचिव बनी थी। अब उषा शर्मा मुख्य सचिव बनी है। करीब एक दशक से उषा शर्मा केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर है। वह वर्तमान में खेल एवं युवा मंत्रालय नई दिल्ली में प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित थी। 1985 से राजस्थान कैडर की आईएएस ऊषा शर्मा के पति बीएन शर्मा भी भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत है और वर्तमान में विद्युत नियामक आयोग में पदस्थापित है। इनका सेवा कार्यकाल जून 2023 तक है।

लंबे अरसे बाद सीनियरिटी नहीं लांघी गई: लंबे समय बाद ऐसा हुआ जब उषा शर्मा की नियुक्ति के मामले में सीनियरिटी नहीं लांघी गई है। 1985 बैच की आईएएस उषा शर्मा के बैच के केवल एक आईएएस रविशंकर श्रीवास्तव हैं, जो पहले से ही सचिवालय से बाहर तैनात हैं। बाकी सभी अफसर उषा शर्मा से जूनियर हैं। निरंजन आर्य 1987 बैच के थे तब बहुत से अफसरों की सीनियरिटी लांघी गई थी। उनसे सीनियर अफसरों को सचिवालय से बाहर करना पड़ा। अब ऐसी नौबत नहीं आएगी। परंपरा के हिसाब से मुख्य सचिव से सीनियर अफसर सचिवालय से बाहर किए जाते हैं। इस बार निरंजन आर्य के सीएस बनने दौरान बाहर किए सीनियर अफसरों को वापस सचिवालय में तैनात किया जा सकता है।

राजस्थान की नव नियुक्त मुख्य सचिव उषा शर्मा ने मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मुलाकात की।

अगले साल जून में रिटायर्ड होंगी: उषा शर्मा का कार्यकाल करीब डेढ़ साल का रहेगा। वे जून 2023 तक इस पद पर रहेंगी। 2023 में चुनाव से 6 महीने पहले ही वे रिटायर हो जाएंगी। सरकार को चुनाव से ठीक पहले नया मुख्य सचिव नियुक्त करने का मौका मिलेगा। हालांकि एक्सटेंशन का विकल्प भी खुला रहेगा।

उषा शर्मा राजस्थान के बूंदी और अजमेर में कलेक्टर रह चुकी हैं। कॉपरेटिव सोसाइटी की रजिस्ट्रार, जेडीए कमिश्नर, स्टेट प्लानिंग बोर्ड की मेम्बर सेक्रेट्री, स्पिनफेड और राजस्थान हैंडलूम डवलपमेंट कॉर्पोरेशन की सीएमडी, उद्योग कमिश्नर, यूडीएच सचिव, उद्योग और पर्यटन विभाग की कमिश्नर और सेक्रेट्री, पर्यटन विभाग की प्रमुख सचिव, केंद्र सरकार में पर्यटन मंत्रालय की एडीजी, प्रशासनिक सुधार मंत्रालय में एडिशनल सेक्रेट्री, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की डीजी भी रह चुकी हैं। 1985 बैच की आईएएस उषा शर्मा युवा मामले और खेलकूद मंत्रालय में नियुक्त थीं। उषा शर्मा मुख्य सचिव बनने वाली दूसरी महिला आईएएस हैं। इससे पहले पिछली गहलोत सरकार में कुशल सिंह को मुख्य सचिव बनाया गया था।

विधानसभा स्पीकर सीपी जोशी की रिश्तेदार हैं: उषा शर्मा विधानसभा अध्यक्ष डॉ सीपी जोशी की रिश्तेदार हैं। उषा शर्मा के पति बीएन शर्मा रिटायर्ड आईएएस हैं। वे भी केंद्र-राज्य में वरिष्ठ पदों पर रहे हैं। बीएन शर्मा अभी राजस्थान इलेक्ट्रिसिटी रेग्युलेटरी कमीशन के चेयरमैन हैं।

मैं आम आदमी का दर्द जानती हूँ, उसे फील करते हुए दूर करूँगी

राजस्थान की नई मुख्य सचिव उषा शर्मा ने सचिवालय में नया पदभार ग्रहण कर लिया है। उषा शर्मा ने कहा कि मैं राजस्थान की दूसरी महिला मुख्य सचिव बनी हूँ। मुख्यमंत्री का धन्यवाद देना चाहूंगी कि उन्होंने दोबारा से एक महिला को मुख्य सचिव के पद पर बैठाया है। महिलाओं के जो भी प्रोग्राम और फ्लैगशिप योजनाएं हैं, उन पर पूरा फोकस रहेगा। मैं 10 साल बाद वापस राजस्थान आई हूँ। लेकिन राजस्थान से कभी मेरी दूरी नहीं थी। राजस्थान बहुत नजदीक रहा है। प्रदेश में जो भी गतिविधियां होती आई हैं। उससे मैंने लगातार सम्पर्क बनाए रखा। जनसुनवाई के मुद्दे पर उन्होंने कहा मुझे आम आदमी का दर्द पता है। मेरा 36 साल का सफर रहा है। मैंने जनता से सीधे जुड़े बीडीओ, एसडीओ और कलेक्टर तक सभी पद शुरूआती दौर में सम्भाले हैं। आम आदमी के दर्द को फील कर इन्क्लूसिव सोच रखते हुए उस दर्द को दूर करने की अप्रोच रहेगी। उषा शर्मा ने कहा राज्य सरकार की जो भी प्राथमिकताएं विकास के कामों, आपदा प्रबंधन और लॉ एंड ऑर्डर को लेकर हैं। संवेदनशील होकर उन योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए पुरजोर कोशिश रहेगी। राजस्थान का नाम राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कैसे आगे बढ़ाया जाए इसके लिए सक्रिय होकर इम्प्लीमेंटेशन करना प्राथमिकता है। पधारो म्हारो देस बड़ा वाक्य है। संवेदनशील और जनभागदारी को सुनिश्चित करने पर फोकस रहेगा। विधानसभा का बजट सत्र आने वाला है।

शिक्षा मंत्री ने किया एसएमसी-एसडीएमसी सदस्यों के साथ संवाद कार्यक्रम

जयपुर। शिक्षा मंत्री डॉ. बीडी कल्ला यहां शिक्षा संकुल में आयोजित संवाद कार्यक्रम में प्रदेश के सभी 301 ब्लॉक की विद्यालय प्रबन्ध समितियों तथा विद्यालय विकास एवम प्रबन्ध समितियों के सदस्यों से वर्चुअल माध्यम से संवाद किया। शिक्षा मंत्री ने समिति सदस्यों से उपलब्धियों, विभिन्न योजनाओं के संचालन में समिति की भूमिका, विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता, शिक्षकों की उपलब्धता व नियमित अध्यापन, बच्चों हेतु खेल मैदान व मंच की उपलब्धता व मिड डे मील योजना के क्रियान्वन के बारे में जानकारी ली। इस दौरान डॉ. कल्ला ने समिति सदस्यों को नियमित रूप से बैठकें आयोजित करने, सक्रिय सदस्यों को जोड़ने, विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं का विकास करने, अभिभावकों तथा स्थानीय लोगों की विद्यालय के विकास में सहभागिता सुनिश्चित करने व विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालयों के आधारभूत ढांचे के विकास हेतु भामाशाहों तथा पूर्व विद्यार्थियों को सहयोग हेतु प्रेरित करने के लिए निर्देशित किया। डॉ. कल्ला ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को एसएमसी/एसडीएमसी सदस्यों के साथ मिलकर आगामी 3 महीनों में सामुदायिक सहभागिता से विद्यालयों के विकास हेतु अगले 25 वर्षों का मास्टर प्लान तैयार करने हेतु दिशा निर्देश दिए।

कार्यक्रम में शिक्षा राज्य मंत्री जाहिदा खान ने विद्यालय विकास हेतु संचालित विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों में समितियों के योगदान के बारे में जानकारी ली। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव पवन कुमार गोयल ने कहा कि शिक्षा मंत्री की परिकल्पना के आधार पर शुरू की गई एसएमसी/ एसएमडीसी आज फलीभूत होकर विद्यालयों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कर्मचारी महासंघों के साथ बजट पूर्व संवाद

सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में कर्मचारी महत्वपूर्ण कड़ी: मुख्यमंत्री

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि हमारी सरकार राज्य कर्मचारियों के हित में सदैव तत्पर रही है। अधिकारी-कर्मचारी राज्य सरकार का अभिन्न अंग हैं और वे सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं के निचले स्तर तक प्रभावी क्रियान्वयन में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

गहलोत मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विभिन्न कर्मचारी महासंघों के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व संवाद को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बजट को समावेशी एवं लोक कल्याणकारी स्वरूप देने की दिशा में राज्य सरकार सभी वर्गों के सुझाव ले रही है। इसी क्रम में कर्मचारी महासंघों को भी अपने महत्वपूर्ण सुझाव देने के लिए आमंत्रित किया गया है। इन सुझावों के आधार पर सरकार को कर्मचारी वर्ग के हित में फैसले लेने में मदद मिलेगी।

समस्या समाधान के लिए निरंतर संवाद जरूरी: मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार एवं कर्मचारी संगठनों के बीच निरंतर संवाद कायम रहे तो विभिन्न समस्याओं का हल आसानी से हो सकता है। समय पर बातचीत से कई मांगों पर निर्णय लिए जा सकते हैं। उन्होंने विभिन्न कर्मचारी संगठनों को मिलकर एक समन्वय समिति बनाने का सुझाव दिया, ताकि सरकार से संवाद का एक प्लेटफॉर्म बन सके। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों के प्रतिनिधि मण्डल मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव वित्त एवं प्रमुख सचिव कार्मिक के समक्ष अपनी वाजिब मांगें रख सकते हैं। राज्य सरकार कर्मचारियों के हित में पूर्व में की गई घोषणाओं को प्राथमिकता से पूरा करने की दिशा में प्रयासरत है।

कोरोना संक्रमण में किया सराहनीय कार्य: गहलोत ने कहा कि कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपनी बात प्रभावी ढंग से रखी। जहां तक संभव हो, राज्य सरकार का प्रयास रहेगा कि उनके सकारात्मक सुझावों को बजट में शामिल किया जा सके। उन्होंने कोविड-19 संक्रमण के दौरान अधिकारियों-कर्मचारियों द्वारा किए गए सहयोग की जमकर तारीफ की और कहा कि 'कोई भूखा नहीं सोए' के हमारे ध्येय वाक्य को पूरा करने में कर्मचारियों ने सराहनीय कार्य किया।

कर्मचारी हित में उठाए गए कदमों के लिए साधुवाद दिया: विभिन्न कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने बजट पूर्व संवाद में उन्हें आमंत्रित करने की मुख्यमंत्री की पहल की सराहना की। इन प्रतिनिधियों ने मंत्रालयिक कर्मचारियों की नई भर्ती और उनकी समस्याओं के समाधान की दिशा में उठाए गए कदमों, राजस्थान ग्रामीण विकास सेवा के नियमों में विसंगति दूर कर अधिकारियों की पदोन्नति की राह खोलने, नर्स ग्रेड-द्वितीय का पदनाम नर्सिंग ऑफिसर तथा नर्स ग्रेड-प्रथम का पदनाम सीनियर नर्सिंग ऑफिसर करने, 11 हजार 353 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उप प्रधानाचार्य के पद सृजित करने, राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्य के नए पदों के सृजन से व्याख्याताओं को पदोन्नति के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने सहित कर्मचारी हित में लिए गए फैसलों के लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को साधुवाद दिया।

एसीएस ऊर्जा की कोल इंडिया चेयरमैन के साथ उच्चस्तरीय बैठक

राजस्थान के तापीय विद्युत गृहों के लिए कोल इंडिया 7 लाख टन अतिरिक्त कोयला उपलब्ध कराएगी

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान के तापीय विद्युतगृहों के लिए कोल इंडिया सात लाख मैट्रिक टन अतिरिक्त कोयला उपलब्ध कराएगी। अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुबोध अग्रवाल की विद्युत भवन में कोल इंडिया के चेयरमैन प्रमोद अग्रवाल व वरिष्ठ अधिकारियो के साथ आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक में कोल इंडिया के चेयरमैन श्री प्रमोद अग्रवाल ने विश्वास दिलाया कि राजस्थान को मांग के अनुसार कोयले की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी।

एसीएस माइंस, पेट्रोलियम व ऊर्जा डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि राज्य में कोयले की उपलब्धता और निर्बाध विद्युत आपूर्ति के लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत गंभीर हैं और देशव्यापी कोयला संकट के समय से ही स्वयं के स्तर पर मोनेटरिंग कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री गहलोत की पहल और समग्र व समन्वित प्रयासों से कोल संकट के बावजूद प्रदेश में विद्युत आपूर्ति में किसी तरह का व्यवधान नहीं आने दिया। उन्होंने बताया कि राजस्थान में तापीय विद्युतगृहों की 7580 मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता है जिसमें से 3240 मेगावाट उत्पादन क्षमता की कोटा, छबड़ा व सूरतगढ़ इकाई के लिए कोल इंडिया से कोयला उपलब्ध कराया जाता है। उन्होंने बताया कि कोयला संकट के दौरान समन्वित प्रयासों से एक और कोयले की आपूर्ति सुनिश्चित कराने के लिए केन्द्र सरकार, कोयला माइंस आदि से समन्वय बनाते हुए युद्धस्तर पर प्रयास किए गए, वहीं जून, 21 में करीब 2448 मेगावाट उत्पादन रह गया था जो बढ़ाकर फरवरी, 22 में औसतन 6000 मेगावाट उत्पादन होने लगा है। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि कोल इंडिया ने एसईसीएल की दीपिका माइंस से 5 लाख टन और एनसीएल की खडिया माइंस से दो लाख मैट्रिक टन अतिरिक्त कोयला उपलब्ध कराना आरंभ कर दिया है। उन्होंने बताया कि रेल्वे से रैक की उपलब्ध बढ़ाने के लिए विद्युत उत्पादन निगम व राज्य सरकार द्वारा संयुक्त प्रयास किए जा रहे हैं।

कोल इंडिया के चेयरमैन प्रमोद अग्रवाल ने बताया कि विदेशों से आयातीत कोयले के दाम बढ़ने और देश में देर तक मानसून के चलते कोयले का संकट उत्पन्न हुआ। उन्होंने बताया कि कोल संकट, मानसून और कोविड की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कोल इंडिया ने कोयले का 25 प्रतिशत अतिरिक्त उत्पादन कर कोयला उपलब्ध कराया जिससे देष में 17 प्रतिशत विद्युंत उत्पादन में बढ़ोतरी हुई।

चेयरमैन प्रमोद अग्रवाल ने विश्वास दिलाया कि राजस्थान को कोयले की कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने अतिरिक्त कोयले को जल्दी से जल्दी विद्युत तापगृहों तक मंगाकर भण्डारित करने को कहा ताकि आगामी मानसून के मौसम में कोयले की उपलब्धता बनी रह सके। चेयरमैन डिस्कॉस भास्कर ए सावंत ने बताया कि राज्य में विद्युत मांग, उपलब्धता और आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

सीएमडी राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम आरके शर्मा ने बताया कि कोल इंडिया से संचालित तापीय विद्युत गृहों के लिए प्रतिदिन 11 रेक आपूर्ति की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि अतिरिक्त कोयला आवंटित होने से कोयले की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। उन्होंने कोल संकट के दौरान कोल इंडिया द्वारा दिए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

सलाहकार समिति का गठन कर पर्यटन से जुड़े विशेषज्ञों का लिया जाएगा सहयोग

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की जाएगी पर्यटन की ब्राण्डिंग: पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह ने कहा कि राज्य में देश- विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन की ब्राण्डिंग की जाएगी। घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राज्यों में वहां की क्षेत्रीय भाषा में 'पधारो म्हारे देस' टैगलाइन के साथ व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा। इससे पर्यटन को न केवल नई पहचान मिलेगी, बल्कि इससे जुड़े हुए उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने विभाग के अधिकारियों को पर्यटन से जुड़े विशेषज्ञों से सहयोग लिए जाने के लिए एक सलाहकार समिति के गठन के भी निर्देश दिए। पर्यटन मंत्री ने विभाग द्वारा चम्बल नदी पर पर्यटकों के लिए क्रूज शिप संचालन तथा प्रदेश की अन्य बड़ी झीलों, तालाबों पर हाऊस बोट संचालन के किए जा रहे प्रयासों की प्रगति की समीक्षा करते हुए कार्य में तेजी लाने तथा साथ ही, अग्रेसिव मार्केटिंग के जरिये पर्यटन से संबंधित उत्पादों के प्रचार-प्रसार के लिए अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए।

आरटीडीसी एवं राज्य होटल निगम के होटलों तथा अन्य कई संपत्तियों का पर्यटन हित में अधिकाधिक उपयोग बढ़ाने के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि आरटीडीसी की बंद इकाइयों को कार्यशील बनाने के प्रयास किए जाकर एवं आरटीडीसी को आय के नियमित स्त्रोत करते हुए स्व-निर्भर बनाना होगा। उन्होंने विभिन्न जिलों में बंद पड़ी ईकाइयों के मूल्यांकन के लिए बनायी गई कमेटियों को शीघ्र रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु जिला कलेक्टरों से वार्ता करने के निर्देश प्रदान किए। उन्होंने पैलेस ऑन व्हील्स को भी घरेलू पर्यटकों के लिए सुगम बनाने एवं ट्रेवल्स एजेंसियों को ड्यूज समय से लौटाने तथा रेल मंत्रालय के साथ ट्रेन के पुर्नसंचालन हेतु समन्वय करने के निर्देश दिए।

पर्यटन शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने विभाग की प्रगति से अवगत कराते हुए कहा कि राज्य में पर्यटन के नए अवसर विकसित करने पर लगातार कार्य किया जा रहा है। उन्होंने पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक ब्राण्डिंग एवं मार्केटिंग को मीडिया कैंपेन के माध्यम से क्रियान्वित करने के बारे में विस्तार से अवगत कराया। पर्यटन निदेशक निशांत जैन, राजस्थान पर्यटन विकास निगम की प्रबंध निदेशक डॉ. मनीषा अरोड़ा सहित वरिष्ठ अधिकार मौजूद रहे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**